

प्रधानमंत्री कार्यालय

दुबई में सामुदायिक अभिनन्दन के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

प्रविष्टि तिथि: 11 FEB 2018 10:22PM by PIB Delhi

मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात है कि मुझे फिर एक बार आप सबके दर्शन करने का अवसर मिला है।

2016 में His Highness Crown Prince of Abu Dhabi भारत आए थे। 2017 में हमारे अत्यंत महत्वपूर्ण गणतंत्र पर्व के ये मुख्य मेहमान थे। शायद कई दशकों के बाद भारत का खाड़ी के देशों के साथ इतना गहरा, इतना व्यापक और इतना vibrant नाता बना है।

आज यही वो खाड़ी के अन्य देश, हमारा नाता सिर्फ buyer or seller का नहीं रहा एक partnership का बना है। भारत इस बात के लिए गर्व करता है कि खाड़ी के देशों में 30 लाख से भी अधिक भारतीय समुदाय के लोग यहां की विकास यात्रा में भागीदार हुए हैं। मैं खाड़ी के देशों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, अभिनंदन करता हूँ। उन्होंने हमारे देश के 30 लाख से अधिक लोगों को यहां भारत के बाहर जैसे उनका दूसरा घर हो उस प्रकार का उत्तम वातावरण दिया है।

भारतीय समुदाय ने भी इसे अपना ही घर मानकर के उसी प्रतिबद्धता के साथ उतने ही परिश्रम के साथ यहां के लोगों के सपनों को साकार करने के लिए अपने सपनों को भी यहां बोया है। और एक प्रकार से मानव समूह के partnership का एक ये उत्तम उदाहरण हम खाड़ी के देशों में अनुभव कर रहे हैं UAE में अनुभव कर रहे हैं। बहुत लोगों को जब आश्चर्य हुआ कि ये His Highness Crown Prince ने, जब मैं पिछली बार आया तब Abu Dhabi में मंदिर बनाने की बात को आगे बढ़ाया। मैं ये इस His Highness Crown Prince का सभी सवा सौ करोड़ हिन्दुस्तानी की तरफ हृदय से आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। मंदिर का निर्माण और वो भी सद्भावना के सेतु के रूप में।

हम उस परंपरा में पले-बढ़े हैं। जहां मंदिर ये मानवता का एक माध्यम है। Holy place, Humanity का, Harmony का एक Catholic Agent है। और मुझे विश्वास है कि स्थापत्य की दृष्टि से, आधुनिक Technology की दृष्टि से, Messaging की दृष्टि से ये मंदिर अपने आप में एक अनोखा तो होगा ही होगा लेकिन यह विश्व समुदाय को वसुधैव कुटुम्बकम् जिस मंत्र को हम लिए हैं उस मंत्र का अनुभव कराने का भी अवसर प्राप्त होगा। और इसके कारण भारत की एक अपनी पहचान भी बनाने का एक माध्यम बनेगा।

मैं मंदिर निर्माण से जुड़े हुए सबसे आग्रह करूंगा कि यहां के शासकों ने भारत के प्रति इतना सम्मान जताया है। भारत की सांस्कृतिक परंपराओं का इतना गौरव किया है ये हमारी जिम्मेदारी है कि हमसे कोई चूक न रह जाए, कोई गलती न हो जाए।

मानवता के उद्घात आदर्शों और विचारों को कहीं कोई खरोंच न आ जाए इसकी जिम्मेदारी इस मंदिर निर्माण से जुड़े हुए और मंदिर से जुड़ने वाले भावी भक्तों के लिए भी ये बहुत बड़ी अनिवार्य रहेगी। ऐसी मेरी आप सबसे अपेक्षा है।

आज देश विकास की नई ऊंचाइयों को पार कर रहा है। ये भारत के लिए सम्मान का विषय है कि आज एक विश्व स्तर के Summit में भारत को विशेष सम्मान दिया गया है। मुझे वहां संबोधन करने के लिए निमंत्रण मिला है। यहां आप लोगों के लिए भारत की जानकारी पाना मुश्किल नहीं है। अगर मैं कोई दो चीज बोलूंगा तो आप दस चीज बताएंगे इतनी आपको भारत की जानकारी है। और एक प्रकार से यहां पर लघु भारत बसता है। हिन्दुस्तान में कोई कोना ऐसा नहीं होगा कि जिसका प्रतिनिधित्व यहां नहीं होगा और इसलिए भारत किस तेजी से बदल रहा है। सवा सौ करोड़ भारतीय अपने सपनों को पूरा करने के लिए किस आत्मविश्वास से आगे बढ़ रहे हैं। ये आप भली-भांति अनुभव कर सकते हैं।

हमने वो दिन भी देखे हैं जब चलो छोड़ो यार, कुछ होने वाला नहीं है। चलो यार बिस्तरा उठायो कहीं चले जाओ। निराशा, आशंका, दुविधा ये कालखंड से हम गुजरे हैं।

एक समय था जब देश में से एक आम आदमी सवाल पूछता था कि ये संभव है क्या? ये होगा क्या? कि हमारे यहाँ भी हो सकता है क्या? ऐसे ही सवालों में सामान्य मानवी उलझा था। और वहां से चलते-चलते चार साल के भीतर-भीतर देश यहां पहुंचा है कि आज देश ये नहीं पूछ रहा है, ये नहीं सोच रहा है कि होगा कि नहीं होगा। कि क्या संभव है या नहीं है। चलो यार दिमाग कौन खपाये उस मनःस्थिति से आज मनःस्थिति यहां पहुंची है। मोदी जी बताओ कब होगा, इस सवाल में शिकायत नहीं है इस सवाल में विश्वास है कि होगा तो अभी होगा।

2014 में वैश्विक स्तर पर ease of doing business हम 142 नंबर पर खड़े थे। यानि पीछे से गिने तो थोड़ा सरल हो जाएगा आगे से गिने तो बहुत देर लग जाएगी। दुनिया में कभी किसी देश ने इतने कम समय में Ease Of Doing Business में world bank के रिपोर्ट के अनुसार 42 का Jump लगाकर के 100 पर पहुंच जाएगा। लेकिन कोई ये न सोचे कि हम वहां रुकने के लिए आए हैं। हम और अधिक

ऊपर जाना चाहते हैं और इसके लिए जहां नीतिगत परिवर्तन करना होगा। जहां रणनीति में परिवर्तन करना होगा। जहां implementation के role map में परिवर्तन करना होगा। जहां संसाधनों की प्रक्रियाओं में परिवर्तन करना होगा। जो भी आवश्यक होगा उन कदमों को उठाते-उठाते हुए भारत को जितना हो सके उतना जल्दी Global bench mark की बराबरी में लाना है।

Globalization वो चीज ऐसी नहीं है कि हम तो जहां हैं वहां बैठे और दुनिया से फायदा उठाते चले जाएं जी नहीं। Globalization वो चीज है जिसमें इस ग्लोब के सभी लोगों ने अपना-अपना दायित्व निभाते हुए हर किसी के साथ जुड़ते हुए, हर किसी से सीखते हुए, हर किसी को साथ लेते हुए उन उंचाइयों को प्राप्त करना है जो दुनिया के आखिरी छोर पर बैठा हुआ देश हो या व्यक्ति हो उनके कल्याण के लिए भी काम आए और तभी जाकर के तो सच्चे अर्थ में वसुधैव कुटुम्बकम् ये हम जीतकर के दिखा सकते हैं।

भारत अपने वैश्विक दायित्व को निभाने के लिए, नियति ने उसके लिए कुछ जिम्मेदारियां दी हैं आज दुनिया कह रही है कि 21वीं सदी एशिया की सदी है। तो ऐसा तो नहीं है कि वो ऐसे आए, टपक जाएगी और हम हाथ ऐसे करके रहेंगे और आ जाएगी।

21वीं सदी एशिया की सदी बनाने के लिए परिश्रम करना पड़ेगा तत्कालीन लाभ हो या न हो। लेकिन लंबे अरसे की भलाई के लिए हमें कदम उठाने होंगे। महात्मा गांधी हमेशा श्रेय और प्रिय इसकी चर्चा किया करते थे। क्या वो काम करना कि जो प्रिय हो या वो काम करना जो श्रेय हो। हमारी कोशिश ये है कि श्रेयस्कर कामों की ओर कदम उठाते चले तत्कालीन शायद प्रिय लगे या न लगे लेकिन वो ऐसे श्रेयस्कर होंगे कि समय रहते वो प्रिय लगने वाले हैं।

कुछ सार्मथ्यवान लोग होते हैं, उनको कोई भी कदम तुरंत प्रिय लगता है। कुछ लोगों को कठिनाई होती है कि थोड़ा देर लगती है। अगर नोटबंदी करता हूं तो देश का गरीब तबका उसको तुरंत समझ आता है। सही दिशा का मजबूत कदम है। लेकिन जिसकी रात की नींद चली गई हो वो दो साल के बाद भी अभी भी रो रहा है।

7 साल से जीएसटी कानून होगा, नहीं होगा चल रहा था, हो गया। अब ये सही है कि हम भी एक मकान में रहते हैं सालों से और दूसरे मकान में जाएं। रात को बड़ी खुशी है आनंद है बढिया मकान नया बनाया है लेकिन जब सुबह नींद से उठते हैं तो आदतन मजबूरन बायीं ओर बाथरूम समझ कर के वही चले जाते हैं और दीवार से टकरा जाते हैं। बाद में पता चलता है ये तो नया घर है यहां बाथरूम right side पर है। ये सबका अनुभव है कि नहीं है। अगर एक इंसान की जिंदगी में भी बदलाव से इतनी कठिनाई होती है तो 70 साल पुरानी व्यवस्था हो या सवा सौ करोड़ का देश हो आदतें जहन में हों, दो-दो, तीन-तीन पीढ़ी उसी में आदतों में जी हों। उसमें से जब बदलाव लाना है तो कठिनाई होती है। लेकिन ये श्रेयस्कर है।

महात्मा गांधी ने जो रास्ता दिखाया था वो रास्ता है और आज इतने कम समय में जीएसटी की कई कठिनाईयों को दूर करते-करते आज एक व्यवस्था के तहत स्वीकृति पाकर के आगे बढ़ रहा है। देश बदल रहा है।

कल मैं Abu Dhabhi में था कई सारे agreement किए। Lower Zakum Concession agreement middle east upstream के अंदर भारतीय कंपनी का पहली बार निवेश होना ये partnership का एक उज्ज्वल पहलू शुरू हुआ है। मेरे कहने का तात्पर्य इतना ही है कि मैं आज अगले कार्यक्रम के लिए मुझे पहुंचना है। इसलिए लंबा समय आपका नहीं ले रहा हूं। लेकिन आप इतनी बड़ी संख्या में आए, इतना प्यार दिया, उधर तो मेरी नजर भी नहीं पहुंचती है। मैं आपका हृदय से बहुत-बहुत आभारी हूं। ये मेरी दूर बड़ी जेट गति वाली दूर है। मैं करीब 70-80 घंटे में, मैं पांच देशों की यात्रा करके वापस लौटने वाला हूं। Jordan, Palestine, Abu-Dhabhi अभी Dubai और यहां कार्यक्रम करने के बाद मुझे Oman जाना है। वहां भी आज बहुत बड़ी मात्रा में भारतीय जन समुदाय का आज शाम मुझे उनके भी दर्शन करने का सौभाग्य मिल रहा है। उनको भी कुछ-न-कुछ बातें बतानी हैं। लेकिन मैं फिर एक बार आपका हृदय से बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं। और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं जो सपने आप देख रहे हैं। जो सपने आपके स्वजन भारत की इस धरती पर देख रहे हैं। हम सब मिलकर के समय-सीमा से पहले उन सपनों को पूरा करके रहेंगे। ये विश्वास मैं आपको देता हूं फिर एक बार आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद। नमस्कार।

अतुल तिवारी/ हिमांशु सिंह/ ममता

(रिलीज़ आईडी: 1520268) आगंतुक पटल : 502

प्रधानमंत्री कार्यालय

फ्रांस के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री द्वारा प्रेस वक्तव्य (मार्च 10, 2018)

प्रविष्टि तिथि: 10 MAR 2018 2:22PM by PIB Delhi

मोनामी मिस्यु ल प्रेसिदों मेक्रों,
सम्माननीय शिष्ट मंडलो के सदस्यगण,
मीडिया,
नमस्कार।

मैं राष्ट्रपति मेक्रों का, और उनके साथ आए प्रतिनिधि मंडल का, भारत में सहर्ष हार्दिक स्वागत करता हूँ। राष्ट्रपति जी, कुछ महीने पहले पिछले साल आपने पेरिस में खुले दिल से और गले मिलकर बहुत गर्मजोशी से मेरा स्वागत किया था। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि आज मुझे भारत की धरती पर आपका स्वागत करने का मौका मिला।

राष्ट्रपति जी,

आप और मैं यहां साथ-साथ खड़े हैं। हम सिर्फ दो सशक्त स्वतंत्र देशों व दो विविधतापूर्ण लोकतंत्रों के ही नेता नहीं हैं। हम दो समृद्ध और समर्थ विरासतों के उत्तराधिकारी हैं।

हमारी strategic partnership भले ही 20 साल पुरानी हो, हमारे देशों और हमारी सभ्यताओं की spiritual partnership सदियों लम्बी है।

18वीं शताब्दी से लेकर आज तक, पंचतंत्र की कहानियों के ज़रिये, वेद, उपनिषद, महाकाव्यों श्री रामकृष्ण और श्री अरविंद जैसे महापुरुषों के ज़रिये, फ्रांसीसी विचारकों ने भारत की आत्मा में झांककर देखा है। वोल्टेय (Voltaire), विक्टर ह्यूगो, रोमाँ रोलाँ, रेने दौमाल, आंद्रे मलरो जैसे असंख्य युगप्रवर्तकों ने भारत के दर्शन में अपनी विचाराधाराओं का पूरक और प्रेरक पाया है।

राष्ट्रपति जी,

आज हमारी यह मुलाकात सिर्फ दो देशों के नेताओं की मुलाकात ही नहीं, दो समान विचारवाली सभ्यताओं और उनकी समग्र धरोहरों का समागम है, संगम है। यह संयोग मात्र नहीं है कि Liberty,

Equality, Fraternity - की गूंज फ्रांस में ही नहीं, भारत के संविधान में भी दर्ज हैं। हमारे दोनों देशों के समाज इन मूल्यों की नींव पर खड़े हैं। इन मूल्यों के लिए हमारे वीर सैनानियों ने दो विश्व युद्धों में अपनी कुर्बानियाँ दी हैं।

Friends,

फ्रांस और भारत की एक मंच पर उपस्थिति एक समावेशी, खुले, और समृद्ध व शान्तिमय विश्व के लिए सुनहरा संकेत है। हमारे दोनों देशों की स्वायत्त और स्वतंत्र विदेश नीतियाँ सिर्फ अपने-अपने हित पर ही नहीं, अपने देशवासियों के हित पर ही नहीं, बल्कि सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को सहेजने पर भी केंद्रित है। और आज, वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए यदि कोई दो देश कंधे से कंधा मिला कर चल सकते हैं, तो वे हैं भारत और फ्रांस। राष्ट्रपति जी, आपके नेतृत्व ने यह ज़िम्मेदारी आसान कर दी है। जब 2015 में International Solar Alliance का launch हुआ था, तो Paris में फ्रांस के राष्ट्रपति जी के साथ हुआ था। कल International Solar Alliance Founding Conference का आयोजन साझा ज़िम्मेदारियों के प्रति हमारी कार्यशील जागरूकता का ज्वलंत उदाहरण है। मुझे खुशी है कि यह शुभ कार्य फ्रांस के राष्ट्रपति जी के साथ ही होगा।

Friends,

रक्षा, सुरक्षा, अंतरिक्ष और high technology में भारत और फ्रांस के द्विपक्षीय सहयोग का इतिहास बहुत लम्बा है। दोनों देशों में द्विपक्षीय संबंधों के बारे में bipartisan सहमति है। सरकार किसी की भी हो, हमारे संबंधों का ग्राफ सिर्फ और सिर्फ ऊँचा ही जाता है। आज की हमारी बातचीत में जो निर्णय लिए गए, उनका एक परिचय आपको अभी हुए समझौतों में मिल गया है। और इसलिए, मैं सिर्फ तीन specific विषयों पर अपने विचार रखना चाहूँगा। पहला, रक्षा क्षेत्र में हमारे संबंध बहुत गहन हैं, और हम फ्रांस को सबसे विश्वस्त रक्षा साझेदारों में एक मानते हैं। हमारी सेनाओं के सभी अंगों के बीच विचार-विमर्श और युद्ध अभ्यासों का नियमित रूप से आयोजन होता है। रक्षा उपकरणों और उत्पादन में हमारे संबंध मजबूत हैं। रक्षा क्षेत्र में France द्वारा Make in India के commitment का हम स्वागत करते हैं।

आज हमारी सेनाओं के बीच reciprocal logistics support के समझौते को मैं हमारे घनिष्ठ रक्षा सहयोग के इतिहास में एक स्वर्णिम कदम मानता हूँ। दूसरा, हम दोनों का मानना है कि भविष्य में विश्व में सुख-शांति, प्रगति और समृद्धि के लिए Indian Ocean क्षेत्र की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होने वाली है। चाहे पर्यावरण हो, या सामुद्रिक सुरक्षा, या सामुद्रिक संसाधन, या freedom of navigation and overflight, इन सभी विषयों पर हम अपना सहयोग मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। और इसलिए, आज हम Indian Ocean क्षेत्र में अपने सहयोग के लिए एक Joint Strategic Vision जारी कर रहे हैं।

और तीसरा, हम मानते हैं कि हमारे द्विपक्षीय संबंधों के उज्ज्वल भविष्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण आयाम है हमारे people-to-people संबंध, विशेष रूप से हमारे युवाओं के बीच। हम चाहते हैं कि हमारे युवा एक दूसरे के देश को जानें, एक दूसरे के देश को देखें, समझें, वहां रहें, वहां काम करें, ताकि हमारे

संबंधों के लिए हज़ारों Ambassadors तैयार हों। और इसलिए, आज हमने दो महत्वपूर्ण समझौते किये हैं, एक समझौता एक दूसरे की शिक्षा योग्यताओं को मान्यता देने का है, और दूसरा हमारी migration and mobility partnership का है। ये दोनों समझौते हमारे देशवासियों के, हमारे युवाओं के बीच करीबी संबंधों का framework तैयार करेंगे।

Friends,

हमारे संबंधों के अन्य कई आयाम हैं। सभी का उल्लेख करूँगा तो शाम हो जाएगी। रेलवे, शहरी विकास, पर्यावरण, सुरक्षा, अंतरिक्ष, यानि ज़मीन से आसमान तक, ऐसा कोई विषय नहीं है जिस पर हम साथ मिल कर काम न कर रहे हों। अंतर्राष्ट्रीय पटल पर भी हम सहयोग और समन्वय के साथ काम करते हैं। अफ्रिकी देशों से भारत और फ्रांस के मज़बूत सम्बन्ध रहे हैं। ये हमारे सहयोग का एक और आयाम विकसित करने का मज़बूत आधार प्रदान करते हैं। कल International Solar Alliance की Founding Conference की सह-अध्यक्षता राष्ट्रपति मेक्रों और मैं करेंगे। हमारे साथ कई अन्य देशों के राष्ट्राध्यक्ष, शासनाध्यक्ष और मंत्रीगण भी उपस्थित होंगे। Planet Earth के भविष्य की खातिर, हम सभी International Solar Alliance की सफलता के लिए प्रतिबद्ध हैं।

राष्ट्रपति जी, मुझे आशा है कि परसों वाराणसी में आपको भारत की उस प्राचीन और साथ ही चिरनवीन आत्मा का अनुभव होगा जिसकी तरलता ने भारत की सभ्यता को सींचा है। और जिसने फ्रांस के अनेक विचारकों, साहित्यकारों और कलाकारों को प्रेरित भी किया है। आने वाले दो दिनों में राष्ट्रपति मेक्रों और मैं विचारों का आदान-प्रदान जारी रखेंगे। मैं एक बार फिर राष्ट्रपति मेक्रों का, और उनके delegation का भारत में हार्दिक स्वागत करता हूँ।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

य वू रेमर्सि

AKT/SH

(रिलीज़ आईडी: 1523668) आगंतुक पटल : 418

प्रधानमंत्री कार्यालय

नेपाल के जनकपुर में नागरिक अभिनंदन समारोह के दौरान प्रधानमंत्री के भाषण का प्रारंभिक मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 11 MAY 2018 7:22PM by PIB Delhi

उपस्थित सभी महानुभाव और यहां भारी संख्या में पधारे जनकपुर के मेरे प्यारे भाइयो और बहनों-

जय सियाराम, जय सियाराम,

जय सियाराम, जय सियाराम,

जय सियाराम, जय सियाराम।

भाइयो और बहनों,

अगस्त 2014 में जब मैं प्रधानमंत्री के तौर पर पहली बार नेपाल आया था तो संविधान सभा में ही मैंने कहा था कि जल्द ही मैं जनकपुर आऊंगा। मैं सबसे पहले आप सबकी क्षमता चाहता हूं क्योंकि मैं तुरंत आ नहीं सका, आने में मुझे काफी विलंब हो गया और इसलिए पहले तो मैं आपसे क्षमा मांगता हूं। लेकिन मन कहता है कि शायद संभवतः सीता मैयाजी ने ही आज भद्रकाली एकादशी का दिन ही मुझे दर्शन देने के लिए तय किया था। मेरा बहुत समय से मन था कि राजा जनक की राजधानी और जगत जननी सीता की पवित्र भूमि पर आकर उन्हें नमन करूं। आज जानकी मंदिर में दर्शन कर मेरी बहुत सालों की जो कामना थी, उस मनोकामना को पूरी कर एक जीवन में धन्यता अनुभव करता हूं।

भाइयो और बहनों,

भारत और नेपाल दो देश, लेकिन हमारी मित्रता आज की नहीं त्रेता युग की है। राजा जनक और राजा दशरथ ने सिर्फ जनकपुर और अयोध्या को ही नहीं, भारत और नेपाल को भी मित्रता और साझेदारी के बंधन में बांध दिया था। ये बंधन है राम-सीता का, ये बंधन है बुद्ध का भी और महावीर का भी और यही बंधन रामेश्वरम में रहने वालों को खींचकर पशुपतिनाथ ले करके आता है। यही बंधन लुम्बिनी में रहने वालों को बौद्ध-गया ले जाता है और यही बंधन, यही आस्था, यही स्नेह आज मुझे जनकपुर खींच करके ले आया है।

महाभारत, रामयण काल में जनकपुर का, महाभारत काल में विराटनगर का, उसके बाद सिमरौन गंज का, बुद्धकाल में लुम्बिनी का; ये संबंध युगों-युगों से चलता आ रहा है। भारत-नेपाल संबंध किसी परिभाषा से नहीं बल्कि उस भाषा से बंधे हुए हैं- ये भाषा है आस्था की, ये भाषा है अपनेपन की, ये भाषा है रोटी की, ये भाषा है बेटी की। ये मां जानकी का धाम है, ये मां जानकी का धाम है और जिसके बिना अयोध्या अधूरी है।

हमारी माता भी एक-हमारी आस्था भी एक; हमारी प्रकृति भी एक-हमारी संस्कृति भी एक; हमारा पथ भी एक और हमारी प्रार्थना भी एक। हमारे परिश्रम की महक भी है और हमारे पराक्रम की गूंज भी है। हमारी दृष्टि भी समान और हमारी सृष्टि भी समान है। हमारे सुख भी समान और हमारी चुनौतियां भी समान हैं। हमारी आशा भी समान, हमारी आकांक्षा भी समान है। हमारी चाह भी समान और हमारी राह भी समान है। हमारे मन, हमारे मंसूबे और हमारी मंजिल एक ही है। ये उन कर्मवीरों की भूमि है जिनके योगदान से भारत की विकास गाथा में और गति आती है। साथ नेपाल के बिना भारत की आस्था भी अधूरी है, नेपाल के बिना भारत का विश्वास अधूरा है, इतिहास अधूरा है, नेपाल के बिना हमारे धाम अधूरे, नेपाल के बिना हमारे राम भी अधूरे हैं।

भाइयो और बहनों,

आपकी धर्म-निष्ठा सागर से भी गहरी है और आपका स्वाभिमान सागरमाथा से भी ऊंचा है। जैसे मिथिला की तुलसी भारत के आंगन में पावनता, शूचिता और मर्यादा की सुगंध भर लाती है वैसे ही नेपाल से भारत की आत्मीयता इस संपूर्ण क्षेत्र को शांति, सुरक्षा और संस्कार की त्रिवेणी से सींचती है।

मिथिला की संस्कृति और साहित्य, मिथिला की लोक कला, मिथिला का स्वागत-सम्मान; सब कुछ अद्भुत है। और मैं आज अनुभव कर रहा हूँ, आपके प्यार को अनुभव कर रहा हूँ, आपके आशीर्वाद का एहसास हो रहा है। पूरी दुनिया में मिथिला संस्कृति का स्थान बहुत ऊपर है। कवि विद्यापति की रचनाएं आज भी भारत और नेपाल में समान रूप से महत्व रखती हैं। उनके शब्दों की मिठास आज भी भारत और नेपाल- दोनों के साहित्य में घुली हुई है।

जनकपुर धाम आकर, आप लोगों का अपनापन देखकर ऐसा नहीं लगा कि मैं किसी दूसरी जगह पर पहुंच गया हूँ, सब कुछ अपने जैसा, हर कोई अपनी जैसा, सब कुछ अपनापन, ये सब अपने तो हैं। साथियों, नेपाल अध्यात्म और दर्शन का केंद्र रहा है। ये वो पवित्र भूमि है- जहां लुम्बिनी है, वो लुम्बिनी, जहां भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था। साथियों, भूमि कन्या माता सीता उन मानवीय मूल्यों, उन ऊसूलों और उन परम्पराओं की प्रतीक है जो हम दो राष्ट्रों को एक-दूसरे से जोड़ती है। जनक की नगरी सीता माता के कारण स्त्री-चेतना की गंगोत्री बनी है। सीता माता, यानी त्याग, तपस्या, समर्पण और संघर्ष की मूर्ति। काठमांडू से कन्याकुमारी तक हम सभी सीता माता की परम्परा के वाहक हैं। जहां तक उनकी महिमा की बात है तो उनके आराधक तो सारी दुनिया में फैले हुए हैं।

ये वो धरती है जिसने दिखाया कि बेटों को किस प्रकार सम्मान दिया जाता है। बेटियों के सम्मान की ये सीख आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। साथियों, नारी शक्ति की हमारे इतिहास और परम्पराओं को संजोने में भी एक बहुत बड़ी भूमिका रही है। अब जैसे यहां की मिथिला पेंटिंग्स को, अगर उसको देखें तो इस परम्परा को आगे बढ़ाने में सबसे अधिक योगदान हमारी माताओं, बहनों का, महिलाओं का रहा है। और मिथिला की यही कला आज पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। इस कला में भी हमें प्रकृति की, पर्यावरण की चेतना हर पल नजर आती है। आज महिला सशक्तिकरण और जलवायु परिवर्तन की चर्चा के बीच मिथिला का दुनिया को ये बहुत बड़ा संदेश है। राजा जनक के दरबार में गार्गी जैसी विदुषी और अष्टावक्र जैसे विद्वान का होना यह भी साबित करता है कि शासन के साथ-साथ विद्वता और आध्यात्म को कितना महत्व दिया जाता था।

राजा जनक के दरबार में लोक कल्याणकारी नीतियों पर विद्वानों के बीच बहस होती थी। राजा जनक स्वयं उस बहस में सहभागी होते थे। और उस मंथन से जो नतीजा निकलता था उसको प्रजा के हित में, जनता के हित में और देश के हित में वे लागू करते थे। राजा जनक के लिए उनकी प्रजा ही सब कुछ थी। उन्हें अपने परिवार के, रिश्ते, नाते, किसी से कोई मतलब नहीं था। बस दिन-रात अपनी प्रजा की चिन्ता करने को ही उन्होंने अपना राज धर्म बना दिया था। इसलिए ही राजा जनक को विदेह भी कहा गया था। विदेह का अर्थ होता है जिसका अपनी देह या अपने शरीर से भी कोई मतलब न हो और सिर्फ जनहित में ही खुद को खपा दे, लोक-कल्याण के लिए अपने-आपको समर्पित कर दे।

भाइयो और बहनों,

राजा जनक और जन-कल्याण के इस संदेश को लेकर ही आज नेपाल और भारत आगे बढ़ रहे हैं। आपके नेपाल और भारत के संबंध राजनीति, कूटनीति, समर नीति, इससे भी परे देवनीति से बंधे हुए हैं। व्यक्ति और सरकारें आती-जाती रहेंगी पर ये हमारा संबंध अजर-अमर है। ये समय हमें मिलकर संस्कार, शिक्षा, शांति, सुरक्षा और समृद्धि की पंचवटी की रक्षा करने का है। हमारा ये मानना है कि नेपाल के विकास में ही क्षेत्रीय विकास का सूत्र जुड़ा हुआ है। भारत और नेपाल की मित्रता कैसी रही है, इसको रामचरितमानस की चौपाइयों के माध्यम से हम भलीभांति समझ सकते हैं।

जे न मित्र दुःख होहिं दुखारी।

तिन्हि बिलोकत पातक भारी॥

निज दुःख गिरि सम रज करि जाना।

मित्रक दुःख रज मेरु समाना॥

यानि जो लोग मित्र के दुख से दुखी नहीं होते उनको देखने मात्र से ही पाप लगता है। और इसलिए अगर आपका अपना दुख पहाड़ जितना विराट भी हो तो उसे ज्यादा महत्व मत दो, लेकिन अगर मित्र का दुख धूल जितना भी हो तो उसे पर्वत जितना मान करके जो कर सकते हो, करना चाहिए।

साथियों,

इतिहास साक्षी रहा है कि जब-जब एक-दूसरे पर संकट आए, भारत और नेपाल, दोनों मिलकर खड़े हुए। हमने हर मुश्किल घड़ी में एक-दूसरे का साथ दिया है। भारत दशकों से नेपाल का एक स्थाई विकास का साझेदार है। नेपाल हमारी neighborhood first ये policy में सबसे आगे आता है, सबसे पहले आता है।

आज भारत, दुनिया की तीसरी बड़ी, सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर तेज गति से आगे बढ़ रहा है तो आपका नेपाल भी तीव्र गति से विकास की ऊंचाइयों को आगे चढ़ रहा है। आज इस साझेदारी को नई ऊर्जा देने के लिए मुझे नेपाल आने का अवसर मिला है।

भाइयो और बहनों,

विकास की पहली शर्त होती है लोकतंत्र। मुझे खुशी है कि लोकतांत्रिक प्रणाली को आप मजबूती दे रहे हैं। हाल में ही आपके यहां चुनाव हुए। आपने एक नई सरकार चुनी है। अपनी आशाओं-आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए आपने जनादेश दिया है। एक वर्ष के भीतर तीन स्तर पर चुनाव सफलतापूर्वक कराने के लिए मैं आपको बहुत-बहुत बधाई देता हूं। नेपाल के इतिहास में पहली बार नेपाल के सभी सात प्रान्तों में प्रान्तीय सरकारें बनी हैं। ये न केवल नेपाल के लिए गर्व का विषय है बल्कि भारत और इस संपूर्ण क्षेत्र के लिए भी एक गर्व का विषय है। नेपाल सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के लिए एक नए चरण में प्रवेश कर रहा है जो सुशासन और समावेशी विकास पर आधारित है।

इस साल, दस साल पहले नेपाल के नौजवानों ने बुलेट छोड़कर बैलेट का रास्ता चुना। युद्ध से बुद्ध तक के इस सार्थक परिवर्तन के लिए भी मैं नेपाल के लोगों को हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। लोकतांत्रिक मूल्य एक और कड़ी है जो भारत और नेपाल के प्राचीन संबंधों को और नई मजबूती देती है। लोकतंत्र वो शक्ति है जो सामान्य से असामान्य जन को बेरोकटोक अपने सपने पूरे करने का अवसर और अधिकार देती है। भारत ने इस शक्ति को महसूस किया है और आज भारत का हर नागरिक सपनों को पूरा करने में जुटा हुआ है। मैं आप सभी की आंखों में वो चमक देख सकता हूं कि आप भी अपने नेपाल को उसी राह पर आगे बढ़ाना चाहते हैं। मैं आपकी आंखों में नेपाल के लिए वैसे ही सपने देख रहा हूं।

साथियों,

हाल में ही नेपाल के प्रधानमंत्री आदरणीय श्रीमान ओली जी का स्वागत करने का अवसर मुझे दिल्ली में मिला था। नेपाल को लेकर उनका vision क्या है, ये जानने का मुझे अवसर मिला। ओलीजी ने समृद्ध नेपाल, सुखी नेपाली के सपने संजोए हुए हैं। नेपाल की समृद्धि और खुशहाली की कामना भारत भी हमेशा करता आया है, करता रहेगा। प्रधानमंत्री ओलीजी को, उनके इस vision को पूरा करने के लिए सवा सौ करोड़ हिन्दुस्तानियों की तरफ से, भारत सरकार की तरफ से मैं बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं। ये ठीक उसी प्रकार की सोच है जैसे मेरी भारत के लिए है।

भारत में हमारी सरकार सबका साथ-सबका विकास के मूल मंत्र को ले करके आगे बढ़ रही है। समाज का एक भी तबका, देश का एक भी हिस्सा विकासधारा से छूट न जाए, ऐसा प्रयास हम लगातार करते रहे हैं। पूव, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण; हर दिशा में विकास का रथ दौड़ रहा है। विशेषतौर पर हमारी सरकार का ध्यान उन क्षेत्रों में ज्यादा रहा है जहां अब तक विकास की रोशनी नहीं पहुंच पाई है। इसमें पूर्वांचल यानी पूर्वी भारत जो नेपाल की सीमा से सटा है, इस पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। यूपी से लेकर बिहार तक, नार्थ-ईस्ट, पश्चिम बंगाल से लेकर उड़ीसा तक, इस पूरे क्षेत्र को देश के बाकी हिस्से के बराबर खड़ा करने का संकल्प हमने लिया है। इस क्षेत्र में जो भी काम हो रहा है, इसका लाभ निश्चित रूप से पड़ोसी के नाते नेपाल को सबसे ज्यादा मिलने वाला है।

भाइयों और बहनों,

जब मैं सबका साथ-सबका विकास की बात करता हूं तो तो सिर्फ भारत के लिए ही नहीं, सभी पड़ोसी देशों के लिए भी मेरी यही कामना होती है। और अब, जब नेपाल में 'समृद्ध नेपाल-सुखी नेपाली' की बात होती है तो मेरा मन भी और अधिक हर्षित हो जाता है। सवा सौ करोड़ भारतवासियों को भी बहुत खुशी होती है। जनकपुर के मेरे भाइयों और बहनों, हमने भारत में एक बहुत बड़ा संकल्प लिया है, ये संकल्प है New India का।

2022 को भारत की आजादी के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। तब तक सवा सौ करोड़ हिन्दुस्तानियों ने New India बनाने का लक्ष्य रखा है। हम एक नए भारत का निर्माण कर रहे हैं जहां गरीब से गरीब व्यक्ति को भी प्रगति के समान अवसर मिलेंगे। जहां भेदभाव, ऊंच-नीच का कोई स्थान न हो, सबका सम्मान हो। जहां बच्चों को पढ़ाई, युवाओं को कमाई और बुजुर्गों को दवाई, ये प्राप्त हो। जीवन आसान हो, आमजन को व्यवस्थाओं से जूझना न पड़े। भ्रष्टाचार और दुराचार से रहित समाज भी हो और सिस्टम भी हो, ऐसे New India की तरफ हम आगे बढ़ रहे हैं।

हमने भारत और प्रशासन में कई सुधार किए हैं। प्रक्रियाओं को सरल बनाया है और दुनिया हमारे इन कदमों को, हमने जो कदम उठाए हैं, आज दुनिया में चारों तरफ उसकी तारीफ हो रही है। हम राष्ट्र निर्माण और जनभागीदारी का संबंध और मजबूत कर रहे हैं। नेपाल के सामान्य मानवी के जीवन को भी खुशहाल बनाने में योगदान के लिए सवा सौ करोड़ हिन्दुस्तानियों को बहुत खुशी होगी, ये मैं आज आपको विश्वास दिलाने आया हूं।

साथियों, बंधुत्वा तब और भी प्रगाढ़ होती है जब हम एक-दूसरे के घर आते-जाते रहते हैं। मुझे खुशी है कि नेपाल के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा के तुरंत बाद मुझे आज यहां आपके बीच आने का अवसर मिला है। जैसे मैं यहां बार-बार आता हूं, वैसे ही दोनों देशों के लोग भी बेरोकटोक आते-जाते रहने चाहिए।

हम हिमालय पर्वत से जुड़े हैं, तराई के खेत-खलिहानों से जुड़े हैं, अनगिनत कच्चे-पक्के रास्तों से जुड़े हैं। छोटी-बड़ी दर्जनों नदियों से जुड़े हुए हैं और हम अपनी खुली सीमा से भी जुड़े हुए हैं। लेकिन आज के युग में सिर्फ इतना ही काफी नहीं है। हमें, और मुख्यमंत्री जी ने जितने विषय बताए, मैं बहुत संक्षिप्त में समाप्त कर दूंगा। हमें हाइवे से जुड़ना है, हमें information ways यानी I-ways से जुड़ना है, हमें trans ways यानी बिजली की लाइन से भी जुड़ना है, हमें रेलवे से भी जुड़ना है, हमें custom check post से भी जुड़ना है, हमें हवाई सेवा के विस्तार से भी जुड़ना है। हमें inland water ways से भी जुड़ना है, जलमार्गों से भी जुड़ना है। जल हो, थल हो, नभ हो या अंतरिक्ष हो, हमें आपस में जुड़ना है। जनता के बीच के रिश्ते-नाते फलें-फूलें और मजबूत हों, इसके लिए connectivity अहम है। यही कारण है कि भारत और नेपाल के बीच connectivity को हम प्राथमिकता दे रहे हैं।

आज ही प्रधानमंत्री ओलीजी के साथ मिलकर मैंने जनकपुर से अयोध्या की बस सेवा का उद्घाटन किया है। पिछले महीने प्रधानमंत्री ओलीजी और मैंने बीरगंज में पहली integrated check post का उद्घाटन किया था। जब ये पोस्ट पूरी तरह से काम करना शुरू करेगी, तब सीमा पर व्यापार और आवाजाही और आसान हो जाएगी। जयनगर-जनकपुर रेलवे लाइन पर भी तेजी से काम चल रहा है।

भाइयो, बहनों,

इस वर्ष के अंत तक इस लाइन को पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है। जब ये रेल लाइन पूरी हो जाएगी तब नेपाल-भारत के विशाल नेटवर्क में रेल नेटवर्क से भी जुड़ जाएगा। अब हम बिहार के रक्सौल से होते हुए काठमांडू को भारत से जोड़ने के लिए तेज गति से आगे बढ़ रहे हैं। इतना ही नहीं, हम जलमार्ग से भी भारत और नेपाल को जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। नेपाल जल, भारत के जलमार्गों के जरिए समुद्र से भी जुड़ जाएगा। इन जलमार्गों से नेपाल में बना सामान दुनिया के देशों तक आसानी से पहुंच पाएगा। इससे नेपाल में उद्योग लगेंगे, रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। ये परियोजनाएं न केवल नेपाल के सामाजिक, आर्थिक बदलाव के लिए जरूरी हैं, बल्कि कारोबार के लिहाज से भी बहुत आवश्यक हैं।

आज भारत और नेपाल के बीच बड़ी मात्रा में व्यापार होता है। व्यापार के लिए लोग यहां-वहां आते-जाते भी रहते हैं। पिछले महीने हमने कृषि क्षेत्र में एक नई साझेदारी की घोषणा की है। मुख्यमंत्री जी आप बता रहे थे, हमने एक नई साझेदारी की घोषणा की है और इस साझेदारी के तहत कृषि के क्षेत्र में सहयोग को और बढ़ावा दिया जाएगा। दोनों देशों के किसानों की आमदनी कैसे बढ़ाई जाए, इस पर ध्यान दिया जाएगा। खेती के क्षेत्र में, साइंस और टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल में हम सहयोग बढ़ाएंगे।

भाइयों और बहनों,

आज के युग में टेक्नोलॉजी के बिना विकास संभव नहीं है। भारत space technology में दुनिया के पांच टॉप देशों में है। आपको याद होगा, जब मैं पहली बार नेपाल आया था, तब मैंने कहा था कि भारत-नेपाल जैसे अपने पड़ोसियों के लिए एक उपग्रह भारत भेजेगा। अपने वायदे को मैं पिछले वर्ष पूरा कर चुका हूं। पिछले वर्ष भेजा गया South Asia Satellite आज पूरी क्षमता से अपना काम कर रहा है और नेपाल को इसका पूरा-पूरा लाभ मिल रहा है।

भाइयों और बहनों,

भारत और नेपाल के विकास के लिए पांच टी, Five T के रास्ते पर हम चल रहे हैं। पहला T है tradition, दूसरा T है trade, तीसरा T है tourism, चौथा T है technology और पांचवा T है transport, यानी परम्परा, व्यापार, पर्यटन, प्रौद्योगिकी और परिवहन से हम नेपाल और भारत को विकास के रास्ते पर आगे ले जाना चाहते हैं।

साथियों, संस्कृति के अलावा भारत और नेपाल के बीच व्यापारिक रिश्ते भी एक अहम कड़ी हैं। नेपाल बिजली उत्पादन के क्षेत्र में तेजी से विकास कर रहा है। आज भारत से लगभग 450 मेगावाट बिजली नेपाल को सप्लाई होती है, इसके लिए हमने नई transmission lines बिछाई हैं।

साथियों, 2014 में नेपाल की संविधान सभा में मैंने कहा था कि ट्रकों के द्वारा तेल क्यों आना चाहिए, सीधे पाईप लाइन से क्यों नहीं। आपको ये जानकर खुशी होगी कि हमने मोतीहारी-अमलेख गंज ऑयल पाइप लाइन का काम भी शुरू कर दिया है।

भारत में हमारी सरकार स्वदेश दर्शन नाम की योजना चला रही है। जिसके तहत हम अपनी ऐतिहासिक धरोहरों और आस्था के स्थानों को आपस में जोड़ रहे हैं। रामायण सर्किट में हम उन सभी स्थानों को जोड़ रहे हैं जहां-जहां भगवान राम और माता जानकी के पग पड़े हैं। अब इस कड़ी में नेपाल को भी जोड़ने की दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं। यहां जहां-जहां रामायण के निशान हैं, उन्हें भारत के बाकी हिस्सों से जोड़ करके श्रद्धालुओं को सस्ती और आकर्षक यात्रा का आनंद मिले और वो बहुत बड़ी मात्रा में नेपाल आएँ, यहां के टूरिज्म का विकास हो।

भाइयों और बहनों,

हर साल विवाह पंचमी पर भारत से हजारों श्रद्धालू अवध से जनकपुर आते हैं। पूरे साल भर परिक्रमा के लिए भगतों का तांता लगा रहता है। श्रद्धालुओं को कोई दिक्कत न हो, इसलिए मुझे ये घोषणा करते हुए खुशी है कि जनकपुर और पास के क्षेत्रों के विकास की नेपाल सरकार की योजना में हम सहयोग देंगे। भारत की ओर से इस काम के

लिए एक सौ करोड़ रुपयों की सहायता दी जाएगी। इस काम में नेपाल सरकार और provincial सरकार के साथ मिलकर projects की पहचान की जाएगी। ये राजा जनक के समय से परम्परा चली आ रही है कि जनकपुर धाम ने अयोध्या को ही नहीं, पूरे समाज के लिए कुछ न कुछ दिया है। जनकपुर धाम ने दिया है, मैं तो सिर्फ यहां मां जानकी के दर्शन करने आया था। जनकपुर के लिए यह घोषणाएं भारत की सवा सौ करोड़ जनता की ओर से मां जानकी के चरणों में मैं समर्पित करता हूं।

ऐसे ही दो और कार्यक्रम हैं। बुद्धिस्ट सर्किट और जैन सर्किट, इसके तहत बुद्ध और महावीर जैन से जुड़े जितने भी संस्थान भारत में हैं, उन्हें आपस में जोड़ा जा रहा है। नेपाल में बौद्ध और जैन आस्था के कई स्थान हैं। ये भी दोनों देशों के श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए एक अच्छा हमारा बंधन बनाने का काम हो सकता है। इससे नेपाल में युवाओं के लिए रोजगार के भी अवसर जुटेंगे।

भाइयों और बहनों,

हमारे खानपान और बोलचाल में बहुत सारी समानता है। मैथिली भाषियों की तादाद जितनी भारत में है, उतनी ही यहां नेपाल में भी है। मैथिली कला, संस्कृति और सभ्यता की चर्चा विश्व स्तर पर होती रहती है। दोनों देश जब मैथिली के विकास के लिए मिलकर सामूहिक प्रयास करेंगे, तब इस भाषा का विकास और अधिक संभव होना आसान हो जाएगा। मुझे पता चला है कि कुछ मैथिली फिल्म निर्माता अब नेपाल-भारत समेत कतर और दुबई में भी एक साथ नई मैथिली फिल्में रिलीज करने जा रहे हैं। ये एक स्वागत योग्य कदम है, इसको बढ़ावा देने की आवश्यकता है। जिस प्रकार यहां मैथिली बोलने वालों की काफी ज्यादा संख्या है, वैसे ही भारत में नेपाली बोलने वालों की संख्या ज्यादा है। नेपाली भाषा के साहित्य के अनुवाद को भी बढ़ावा देने का प्रयास चल रहा है। आपको ये भी बता दूं कि नेपाली भारत की उन भाषाओं में शामिल हैं जिन्हें भारतीय संविधान से मान्यता दी गई है।

भाइयों और बहनों,

एक और क्षेत्र है जहां हमारी ये साझेदारी और आगे बढ़ सकती है। भारत की जनता ने स्वच्छता का एक बहुत बड़ा अभियान छेड़ा है। यहां बिहार और पड़ोस के दूसरे राज्यों में, जब आप अपनी रिश्तेदारी में जाते हैं, तब आपने भी देखा और सुना होगा- सिर्फ तीन-चार साल में ही 80 प्रतिशत से अधिक भारत के गांव खुले में शौच से मुक्त हो चुके हैं। भारत के हर स्कूल में बच्चियों के लिए अलग टॉयलेट सुनिश्चित किए गए हैं। मुझे ये जानकर बहुत खुशी हुई कि स्वच्छ भारत और स्वच्छ गंगा की तरह आप लोगों ने भी और मेयर जी को मैं बधाई देता हूं, जनकपुर के ऐतिहासिक धार्मिक स्थानों को साफ करने का सफल अभियान चलाया है। पौराणिक महत्व के स्थानों को सहेजने के प्रयासों से नेपाल के युवाओं का जुड़ना और भी खुशी की बात है।

मैं विशेष रूप से यहां के मेयर को बधाई देना चाहता हूं, उनके साथियों को बधाई देना चाहता हूं, यहां के नौजवानों को बधाई देना चाहता हूं, यहां के विधायकों को, सांसदों को बधाई देना चाहता हूं, जिन्होंने स्वच्छ जनकपुर अभियान को आगे बढ़ाया है। भाइयों और बहनों आज मैंने मां जानकी का दर्शन किया। कल मुक्तिनाथ धाम और फिर पशुपतिनाथजी का भी आशीर्वाद लेने का भी मुझे अवसर मिलेगा। मुझे विश्वास है कि देव आशीर्वाद और आप जनता-जनार्दन के आशीष, जो भी, जो भी समझौते होंगे, वो समृद्ध नेपाल और खुशहाल भारत के संकल्प को साकार करने में सहायक होंगे।

एक बार फिर से नेपाल के प्रधानमंत्री आदरणीय ओलीजी का, राज्य सरकार का, नगर सरकार का और यहां की जनता-जनार्दन का अंतःकरण पूर्वक अभार व्यक्त करता हूं, आपका धन्यवाद करता हूं।

जय सियाराम। जय सियाराम।

वीके/एम/डीए/-8505

(रिलीज़ आईडी: 1531933) आगंतुक पटल : 1451

प्रधानमंत्री कार्यालय

काठमांडू, नेपाल में राष्ट्रीय सभा गृह में नागरिक अभिनन्दन के अवसर पर प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 12 MAY 2018 8:15PM by PIB Delhi

शाक्य जी आपने और आपके साथियों ने काठमांडू की महानगर पालिका ने मेरे लिए इस स्वागत समारोह का आयोजन किया है। मैं इसके लिए हृदय से आप सबका बहुत-बहुत आभारी हूँ। ये सिर्फ मेरा नहीं पूरे भारत का सम्मान है। मैं ही नहीं सवा सौ करोड़ भारतीय भी कृतज्ञ है। काठमांडू से और नेपाल से, हर भारतीय का एक अपनेपन का नाता है और ये सौभाग्य मुझे भी मिला है।

जब मैं राजनीति में भी नहीं था। मैं जब भी नेपाल आता हूँ तो मुझे शांति और आत्मियता की अनुभूति होती है। और इस सबसे बड़ा कारण आप सभी का प्यार है, आपका स्नेह, आपका गर्मजोशी भरा स्वागत, सत्कार और सम्मान। कल मैं जनकपुर में था, आज के युग को एक बहुत बड़ा संदेश जनकपुर देता है। राजा जनक की क्या विशेषता थी। उन्होंने शस्त्र को तुड़वा दिया और स्नेह से जुड़वा दिया। ये ऐसी धरती है जो शस्त्र को तोड़कर के स्नेह से जोड़ती है।

साथियों जब भी मैं काठमांडू के बारे में सोचता हूँ तो जो छवि उभरती है। वो सिर्फ एक शहर की नहीं है। वो छवि सिर्फ एक भौगोलिक घाटी की नहीं है। काठमांडू हमारे पड़ोसी और अभिन्न मित्र नेपाल की राजधानी ही है, इतना ही नहीं है। भगवान बुद्ध की जन्मस्थली के देश की राजधानी ही नहीं है। एवरेस्ट पर्वत के देश की लिली गुराज के देश की सिर्फ राजधानी नहीं है। काठमांडू अपने आप में एक पूरी की पूरी दुनिया और इस दुनिया का इतिहास उतना ही पुराना उतना ही भव्य और उतना ही विशाल है जितना हिमालय।

मुझे काठमांडू ने, नेपाल ने हमेशा ही आकर्षित किया है। क्योंकि ये शहर जितना गहन है। उतना ही गतिमान भी है। हिमालय की गोद में बसा ये एक अनमोल रत्न है। काठमांडू सिर्फ कास्ट यानि लकड़ी का मंडप नहीं है। ये हमारी साझा, सांस्कृति और विरासत का एक दिव्य भव्य महल है। इस शहर की विविधता में नेपाल की महान विरासत और उसके बड़े दिल की एक झलक महसूस होती है। नागार्जुन के जंगल हों या शिवपुरी की पहाड़ियाँ, सैकड़ों झरनों और जलधाराओं की शिथिलता हो या फिर बागमती का उद्गम, हजारों मंदिरों, मंजुश्री की गुफाओं और बौद्ध विहारों का ये शहर दुनिया में अपने-आप में अनुठा है।

इमारतों की छत से एक तरफ धोलागिरी और अन्नपूर्णा और दूसरी तरफ सागर माथा, जो दुनिया जिसे एवरेस्ट के नाम से जानती है और कंचनगंगा। ऐसे दर्शन कहां संभव है अगर संभव है सिर्फ और सिर्फ काठमांडू है।

बसंतपुर की बानगी, पाटन की प्रतिष्ठा, भरतपुर की भव्यता, कीर्तिपुर की कला और ललितपुर का लालित्य। काठमांडू ने अपने-आप में जैसे इंद्रधनुष के सभी रंगों को अपने अंदर समेट के रखा है। यहां की हवा में बहुत-सी परंपराएं ऐसे घुलमिल गई हैं जैसे चंदन में रोली। पशुपतिनाथ में प्रार्थना और भक्तों की भीड़ स्वयंभू की सीढ़ियों पर अध्यात्म की चहल-कदमी, बौद्धा में परिक्रमा कर रहे श्रद्धालुओं के पग-पग पर **ओम मणि पद्मेहम** इसकी गूंज, ऐसा लगता है जैसे तारों पर सरगम के सारे सुर गले मिले हैं।

मुझे बताया गया है कि कुछ त्यौहार जैसे नेवारी समुदाय के त्यौहार ऐसे भी हैं जिनमें बौद्ध और हिंदु मान्यताओं और प्रथाओं का अभुतपूर्व संगम है। परंपरा और संस्कृति ने काठमांडू के हस्तकला और कलाकारों को बेजोड़ बनाया है। चाहे वो हाथ से बना कागज हो या तारा और बुद्ध जैसी मूर्तियाँ, भरतपुर की मिट्टी से बने बर्तन हों या पाटन में

पत्थर, लकड़ी और धातू का काम हो। नेपाल की बेजोड़ कला और कलाकारी का ये महाकुंभ है और महाकुंभ है काठमांडू और मुझे खुशी है कि यहां की युवा पीढ़ी इस परंपरा को भलीभांति निभा रही है। और उसमें युवानुकूल परिवर्तन करके कुछ नयापन भी मिला रही है।

साथियों नेपाल की मेरी अब तक की दो यात्राओं में मुझे पशुपतिनाथ के दर्शन का सौभाग्य मिला था। इस यात्रा में मुझे भगवान पशुपतिनाथ के अलावा पवित्र जनकपुर धाम और मुक्तिनाथ तीनों पवित्र तीर्थ स्थानों पर जाने का सुअवसर मिला। ये तीनों स्थान सिर्फ महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल ही नहीं हैं। ये भारत और नेपाल के अडिग और अटूट संबंधों का हिमालय है। आगे जब भी नेपाल यात्रा का अवसर बनेगा मैं समय निकाल कर भगवान बुद्ध की जन्मस्थली लुंबिनी जाने का कार्यक्रम भी अवश्य बनाऊंगा।

साथियों शांति, प्रकृति के साथ संतुलन और आध्यात्मिक जीवन के मूल्यों से परिपूर्ण हमारे दोनों देशों के value system ये पूरी मानव जात की, पूरे विश्व की एक अनमोल धरोहर है। और इसलिए ये कोई आश्चर्य की बात नहीं है। कि पूरी दुनिया से लोग शांति की खोज में भारत और नेपाल की ओर खींचे चले आते हैं।

कोई बनारस जाता है तो कोई बोधगया, कोई हिमालय की गोद में जाकर रहता है तो कोई बुद्ध के विहारों में साधना एक ही है खोज एक ही है। आधुनिक जीवन की बैचेनियों का समाधान भारत और नेपाल के साझे मूल्यों में मिलेगा।

साथियों बागमती के तट पर काठमांडू में पशुपतिनाथ और गंगा के तट पर काशी विश्वनाथ। बुद्ध की जन्मस्थली लुंबिनी, तपस्थली बोधगया और सन्देश क्षेत्र सारनाथ।

साथियों हम सभी हजारों वर्षों की साझी विरासत के धनी हैं। हमारी ये साझा विरासत दोनों देशों की युवा पीढ़ी की संपत्ति है इसमें उनके अतीत की जड़ें, वर्तमान के बीज और भविष्य के अंकुर हैं।

साथियों पूरे विश्व में आज अनेक प्रकार के परिवर्तनों का दौर चल रहा है। वैश्विक वातावरण अनेक अस्थिरताओं और अनिश्चताओं से भरा पड़ा है।

साथियों हजारों साल से **वसुधैव कुटुम्बकम्** यानि सारा विश्व एक परिवार है। ये भारत का दर्शन रहा है। **सबका साथ सबका विकास** हम अपने विदेश सहयोग पर भी उतनी ही पवित्रता से आगे बढ़ा रहे हैं। भारतीय शास्त्रों में प्रार्थना है **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्..** यानि सब प्रसन्न हों, सब स्वस्थ हों, सबका कल्याण हो, किसी को दुख न मिले। भारत के मुनिषियों ने हमेशा से यही सपना देखा है। इस आदर्श को प्राप्त करने के लिए हमारी विदेश नीति सबको साथ लेकर चलने पर आधारित है। खासतौर पर पड़ोस में भारत के अनुभव और भारत के अवसरों को साझा करते हैं। neighborhood first हमारी संस्कृति में सिर्फ विदेश नीति ही नहीं जीवन शैली है। बहुत से उदाहरण हैं स्वयं विकासशील होते हुए भी भारत 50 साल से भी अधिक समय से Indian Technical and Economic Corporation कार्यक्रम के अंतर्गत 160 से अधिक देशों में Capacity Building के लिए सहयोग और उन देशों की जरूरत के अनुसार सहयोग हम करते आए हैं।

पिछले साल भारत ने एक साउथ एशिया उपग्रह छोड़ा इससे हमारी अंतरिक्ष क्षमताओं के सुपरिणाम हमारे पड़ोसी देशों को उपहार स्वरूप उपलब्ध हो रहे हैं। और इसी सभा मंच में जब सार्क समिट के लिए मैं आया था तो मैंने इसी मंच से इस बात की घोषणा की थी। इसके साथ ही हम इस बात पर भी ध्यान दे रहे हैं कि दुनिया के सामने जो बड़ी चुनौतियां हैं। जिनसे कोई भी देश अकेला नहीं निपट सकता। उनका सामना करने के लिए हम किस प्रकार अंतराष्ट्रीय साझेदारियों का विकास करें। उदाहरण के तौर पर 2016 में भारत और फ्रांस ने मिलकर Climate Change के संदर्भ में एक नए अंतराष्ट्रीय Treaty based Organization की कल्पना की। ये क्रांतिकारी कदम अब एक सफल प्रयोग में बदल गया है।

इस वर्ष मार्च में फ्रांस के राष्ट्रपति श्रीमान मैक्रो और करीब 50 अन्य देशों के नेताओं ने दिल्ली में इस International Solar Alliance के पहले समिट में भाग लिया। ऐसे प्रयासों से Climate Change जैसी चुनौतियों का सामना करने के लिए Technological और आर्थिक साझेदारियां विकसित करने में छोटे विकासशील देशों की जरूरतों को पूरा करने में मुझे विश्वास है बहुत बड़ी मदद मिलेगी।

साथियों जब भारतीय नेपाल की ओर देखते हैं तो हमें नेपाल को देखकर, यहां के माहौल को देखकर बहुत खुशी होती है। नेपाल में माहौल है आशा का, उज्ज्वल भविष्य की कामना का, लोकतंत्र की मजबूती का और समृद्ध नेपाल, सुखी नेपाली के विजन का- और इस माहौल को बनाने में आप सभी का बहुत बड़ा योगदान है।

2015 के भूकंप के भयावह त्रासदी के बाद नेपाल और विशेष रूप से काठमांडू के लोगों ने जिस धैर्य और अधम्य साहस का परिचय दिया है। वो पूरे विश्व में एक मिसाल है। ये आपके समाज की दृढ़ निष्ठा और कर्मठता का प्रमाण है कि इतने कम समय में आपदा से निपटते हुए भी नेपाल में एक नई व्यवस्था का निर्माण हुआ है। भूकंप के बाद सिर्फ इमारतों का ही नहीं, देश और समाज का भी एक प्रकार से पुनः निर्माण हुआ है। आज नेपाल में Federal, Provincial और local तीनों स्तर पर लोकतांत्रिक सरकारें हैं। और तीनों स्तरों के चुनाव एक साल के अंदर-अंदर सफलतापूर्वक आयोजित किए गए हैं। ये शक्ति आप सबके अंदर अंतर्निहित है और इसलिए मैं आप सबका हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं।

साथियों नेपाल ने युद्ध से बुद्ध का बहुत लंबा सफर तय किया है। बुलेट का बोलबाला था। बुलेट को छोड़ करके बैलेट के रास्ते को चुना है। युद्ध से बुद्ध की ये यात्रा है। लेकिन मंजिल अभी और दूर है, बहुत आगे तक जाना है। एक प्रकार से कहूं तो अब हम माउंट एवरेस्ट का बेसकैंप पहुंच गए हैं। लेकिन शिखर की चढ़ाई अभी हमें तय करना है और जिस प्रकार पर्वतारोहियों को नेपाल के शेरपाओ का मजबूत साथ और समर्थन मिलता है उसी प्रकार नेपाल की इस विकास यात्रा में भारत आपके लिए शेरपा का काम करने के लिए तैयार है।

पिछले महीने प्रधानमंत्री श्रीमान ओली जी की भारत यात्रा में, और कल और आज की मेरी नेपाल यात्रा में मेरा यही संदेश है कि मेरी यही भावना मैंने अलग-अलग शब्दों में व्यक्त की है। नेपाल अपनी आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुसार आगे बढ़े। ये मैं बहुत जिम्मेवारी से कह रहा हूं। नेपाल अपनी और प्राथमिकताओं और अपनी आवश्यकताओं के अनुसार आगे बढ़े। आपकी सफलता के लिए भारत हमेशा नेपाल के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलेगा। आपकी सफलता में ही भारत की सफलता है। नेपाल की खुशी में ही भारत की खुशी है।

काम चाहे वो रेलवे लाइनस का हो या सड़क निर्माण का हो, हाइड्रो पावर का हो या ट्रांसमिशन लाइनस का हो, इंटीग्रेटिड चेक पोस्ट का हो या ऑइल पाइप लाइन का हो या फिर भारत और नेपाल के सांस्कृतिक और लोगों के बीच People to people मजबूत संबंधों को और भी ताकत देने का काम हो। आपकी हर आवश्यकता में हम साथ चल रहे हैं और आगे भी चलते रहेंगे। हमने काठमांडू को भारत से रेल द्वारा जोड़ने के प्रोजेक्ट के डीपीआर का काम करना शुरू कर दिया है। और अब तो शायद यहां नेपाल में कितनी इसकी चर्चा है मुझे मालूम नहीं है। इन दिनों भारत में IPL के क्रिकेट मैच चल रहे हैं। और नेपाल भी अब IPL में जुड़ गया है।

इस यात्रा में हाल ही के बहुत सी पहलों से आप परिचित हैं। मुझे बताया गया है कि पहली बार नेपाल का एक नौजवान खिलाड़ी संदीप लमीछाने ने IPL में भाग ले रहा है। मैं आशा करता हूं कि आने वाले समय में क्रिकेट ही नहीं अन्य खेलों के माध्यम से भी हमारे People to people संबंध मजबूत होते रहेंगे।

साथियों इन्हीं शब्दों के साथ मैं एक बार फिर काठमांडू मेयर श्रीमान शाक्य जी का, काठमांडू एडमिनिस्ट्रेशन का, नेपाल की सरकार का, आदरणीय मुख्यमंत्री जी का, विदेश मंत्री जी का और आप सभी का हृदय से आभार प्रकट करता हूं। और हृदय का वही भाव है जो आपके दिलों में है वही मेरे दिल में है जो हर नेपाली के दिल में है वही हर हिंदुस्तानी के दिल में है और वो यही है

नेपाल भारत मैत्री अमर रहोस.....

नेपाल भारत मैत्री अमर रहोस.....

नेपाल भारत मैत्री अमर रहोस.....

बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी/कंचन पटियाल/हिमांशु सिंह/बाल्मीकि महतो/ममता

(रिलीज़ आईडी: 1533838) आगंतुक पटल : 49

प्रधानमंत्री कार्यालय

नीदरलैंड्स के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री द्वारा प्रेस वक्तव्य (मई 24, 2018)

प्रविष्टि तिथि: 24 MAY 2018 5:31PM by PIB Delhi

Your Excellency, प्रधानमंत्री

मेरे मित्र

मार्क रूट

Distinguished Delegates,

Members of the Media,

Friends,

प्रधानमंत्री मार्क,

और उनके साथ आए शिष्टमंडल का भारत में हार्दिक स्वागत है। मुझे विशेष रूप से प्रसन्नता है कि प्रधानमंत्री मार्क के साथ उनके 4 कैबिनेट सहयोगी, हेग के मेयर और 200 से अधिक business प्रतिनिधि भी भारत आए हैं। Netherlands से भारत आने वाला यह सबसे बड़ा business प्रतिनिधिमंडल है। और यह साफ़ दर्शाता है कि हमारे trade and investment संबंधों में कितना डाईनामिस्म है। कितनी संभावनाएं हैं। 2015 में प्रधानमंत्री रूट पहली बार भारत आए थे। 2017 में मेरा Netherlands जाना हुआ था। और हमारा तीसरा summit आज हुआ है। ऐसे बहुत कम देश हैं, जिनके साथ हमारे संबंधों में high level visits का इस प्रकार का momentum है। और इस momentum के लिए, भारत के साथ संबंधों को निजी रूप से प्राथमिकता देने के लिए, मैं मेरे मित्र मार्क का हृदय से अभिनन्दन करता हूँ।

Friends,

आज हम दोनों ने अपने द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति का review किया। क्षेत्रीय और वैश्विक developments के बारे में अपने-अपने आकलन साझा किये। और हम दोनों देशों के प्रमुख CEOs से भी मिले। पिछले वर्ष जब मैं Netherlands गया था, तो मैंने मेरे मित्र मार्क से आग्रह किया था कि वे International Solar Alliance का सदस्य बनने पर सकारात्मक रूप से विचार करें। सौर उर्जा के क्षेत्र में Netherlands के पास जो technology है, जो experience है, और जो महारत है, उसका लाभ पूरे विश्व को मिलना चाहिए। और मुझे प्रसन्नता है कि आज Netherlands International Solar Alliance का सदस्य बन गया है। इस निर्णय के लिए मैं प्रधानमंत्री रूट का आभार प्रकट करता हूँ। UN Security Council से ले कर Multilateral Export Control Regimes तक, भारत और Netherlands के बीच बहुत अच्छा और क़रीबी सहयोग और समन्वय रहा है। अब International Solar Alliance अंतर्राष्ट्रीय मंच पर हमारे मजबूत सहयोग का एक नया आयाम होगा।

Friends,

भारत Dutch कंपनियों के लिए नया नहीं है। बहुत वर्षों से सैकड़ों Dutch कंपनियां भारत में काम कर रही हैं। Netherlands भारत में अब तक हुए कुल Foreign Direct Investment के लिए पांचवां सबसे बड़ा स्रोत है। और पिछले कुछ समय में तो तीसरे सबसे बड़े स्रोत के रूप में उभरा है। उसी प्रकार भारतीय कंपनियों के निवेश के लिए भी Netherlands बहुत आकर्षक destination है। और इसलिए, दोनों देशों के CEOs से मुलाकात काफी उपयोगी है। मुझे प्रसन्नता है कि Netherlands के business समुदाय में भारत में बन रहे अवसरों के प्रति उत्साहपूर्वक भावना है। मैंने भी उन्हें आश्चस्त किया है कि भारत में economic reforms के प्रति मेरा मजबूत commitment बना रहेगा। कृषि और food processing के क्षेत्र भारत के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। ये विषय हमारी Food Security से जुड़े हुए हैं। साथ ही, भारत के किसानों की आय को दोगुना करने के हमारे लक्ष्य के लिए भी इनका अहम महत्त्व है। इन क्षेत्रों में Netherlands को महारत हासिल है। पिछले वर्ष World Food India में Netherlands ने Focus Country के रूप में हिस्सा लिया था। और मुझे विश्वास है कि 2019 में इसके अगले edition में Netherlands की भागीदारी और भी अधिक होगी। मुझे प्रसन्नता है कि बारामती में सब्जियों के लिए पहला Indo-Dutch Centre of Excellence शुरू हो गया है। इस प्रकार के अन्य केन्द्रों पर भी हम साथ मिल कर काम कर रहे हैं। इसी प्रकार शहरी विकास में भी हमारा सहयोग गतिमान है। वड़ोदरा और दिल्ली में waste water management के projects अच्छी प्रगति कर रहे हैं। Science and Technology में हमारे सहयोग के 10 वर्ष पूरे हो रहे हैं, और 2019 में भारत में आयोजित होने वाली Tech Summit में Netherlands द्वारा Partner Country के रूप में भागीदारी से इस सफल साझेदारी को और भी मजबूती मिलेगी।

Friends,

मेरी सरकार की विदेश नीति की एक बड़ी प्राथमिकता रही है विदेश में रहने वाले भारतीय समाज के विषयों पर हमारा खास ध्यान। September 2017 में सेंट मार्टन में आए Hurricane के समय भारतीय नागरिकों को सुरक्षित निकालने के विषय पर सहयोग के लिए मैं प्रधानमंत्री रूट और Netherlands की सरकार का विशेष रूप से अभिनन्दन करता हूँ।

Excellency,

मैं एक बार फिर भारत में आपका और आपके delegation का हार्दिक स्वागत करता हूँ।

धन्यवाद। बहुत-बहुत धन्यवाद।

AKT/SH/SK

(रिलीज़ आईडी: 1533383) आगंतुक पटल : 137

प्रधानमंत्री कार्यालय

प्रधानमंत्री का भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए रवांडा में समारोह का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 23 JUL 2018 8:02PM by PIB Delhi

नमस्ते, कैसे हैं। केम छो।

अभी हमारे High Commissioner बता रहे थे कि प्रधानमंत्री ने समय निकाला। हकीकत ये है कि आप लोगों ने मेरे लिए समय निकाला। क्योंकि ये कोई जगने का तो समय नहीं है। आप लोग कब से खाना खाकर सोने की तैयारी करते हो, लेकिन मेरे लिए आप जाग रहे हैं और इतनी देर रात यहां तक आए हैं और इतना ही नहीं, अड़ोस-पड़ोस के देशों से भी आए हैं। तो आपका ये प्यार, आपके आशीर्वाद, इसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूं।

जब स्टेडियम में बैठ करके क्रिकेट का मैच देखते हैं, तो बहुत पता नहीं चलता है कि बॉल कहां गया, लेकिन दूर घर में बैठ करके टीवी पर देखते हैं, हर चीज का पता रहता है बॉल कहां गया, बॉलर कहां गया, बैट्समैन कहां खड़ा है, उसका पैर कहां है, सब पता चलता है। इसलिए भारत में हम जो भी कुछ कर रहे हैं; भारत में रहने वालों को जितना पता होता है उससे ज्यादा वहां दूर रहने वालों को रहता है। हर बारीकी को उनको अंदाज होता है। और स्वाभाविक है दुनिया में कहीं पर भी हो भारतीय, भारत से आने वाली हर अच्छी खबर, उसको एक नई खुशी, नया उत्साह देती है।

क्या लगता है पिछले चार साल में आपका तजुर्बा कुछ बढ़ा है या ऐसा ही है? आपको लगता है भारत के पासपोर्ट की ताकत बढ़ गई है? अब आपको लगता होगा दुनिया में कहीं पर भी एयरपोर्ट पर उतरते हैं कहीं immigration काउंटर पर जाते होंगे और हिन्दुस्तानी हैं कहते ही अपनी आंख मिला करके कोई खुशी व्यक्त करता है के नहीं करता? पहले आप हाथ मिलाते तो ठीक है, अब मिलाते हैं तो छोड़ता ही नहीं है। बदल आया कि नहीं आया? ये बदल इसलिए आया है कि देश में बदल आया है, और देश बहुत तेज गति से प्रगति कर रहा है।

ये मोदी के कारण नहीं है, ये सवा सौ करोड़ हिन्दुस्तानियों के कारण है। आज कोई खिलाड़ी खेल में अगर दुनिया में जाकर भी गोल्ड मैडल ले आता है, उसमें मोदी ने कहां पसीना बहाया, लेकिन ये इसलिए संभव होता है कि मोदी ने आ करके selection process को इतना transparent किया है; तो सही व्यक्ति सही जगह पर जाता है और इसलिए गोल्ड मैडल लाता है।

पारदर्शिता के साथ जिसको जिसका हक है, वो अगर मिलता है तो वो कुछ कमाल करके दिखाता है। और सरकार का यही काम है और हमारा तो मंत्र है, 'सबका साथ सबका विकास' और ये 'सबका साथ सबका विकास' के मंत्र की ताकत बहुत बड़ी है। और इसी में देश के हर व्यक्ति को लगता है कि अब देश को आगे बढ़ाने का मौका आया है और देश को आगे बढ़ाना हमारी जिम्मेदारी है।

अब पहले पता नहीं था कि टॉयलेट होना चाहिए? क्या इसके लिए मोदी के आने का इंतजार करना था क्या? घर में टॉयलेट होना चाहिए इसके लिए ये आदमी प्रधानमंत्री बनेगा ये इंतजार होता है क्या? लेकिन चलता है, होता है, कोई ध्यान देता नहीं था। अब बदल आ गया। इतने कम समय में आठ करोड़ टॉयलेट बन गए, लाखों गांव open defecation फ्री हो गए।

एक बार अगर काम करने के लिए तय करते हैं और हमारी कार्यशैली ऐसी हैं कि, ऐसा तो नहीं कि हिन्दुस्तान में समस्याएं नहीं हैं, समस्याएं हैं, लंबे कालखंड से हैं। लेकिन अब समस्याओं को गिनते रहेंगे कि चलो भाई हमें जितना समय मिला है, जितनी समस्याओं से देश को मुक्त कर सकते हैं, करें। अब आजादी के 70 साल के बाद भी 18 हजार गांव 18वीं शताब्दी में जी रहे थे, eighteenth century में। बिजली नहीं थी किसी गांव में, हमने तय किया 1000 दिन में पहुंचाना है पहुंचा दिया। अभी भारत में चार करोड़ घर ऐसे हैं जिसमें घरों में बिजली नहीं है। हमने तय किया है समय सीमा तय है, एक साल में पहुंचाना है तो पहुंचाना है; पहुंचा देंगे, चैन से बैठेंगे नहीं।

समस्याओं के समाधान से विश्वास पैदा होता है। हर किसी को लगता है ये हो सकता है, ये हम कर सकते हैं। जब दुनिया में कहीं पर भी हिन्दुस्तान का नागरिक सुनता है कि भारत ने एक साथ 100 सेटेलाइट छोड़े, कितना गर्व होता है, अच्छा भाई! एक साथ सौ सेटेलाइट! ये काम हिन्दुस्तान कर रहा है आज।

भारत ने अपनी एक ताकत दिखाई है, आज हिन्दुस्तान इतनी प्रगति कर रहा है, यहां जितने नागरिक हैं उससे ज्यादा मोबाइल फोन हैं। भारत आधुनिकता की ओर आगे बढ़ रहा है। जब हम आए थे तब दुनिया में हम 9 या 10 नंबर पर रहते थे इकोनॉमी में, अभी हम छह पर पहुंच गए। और पहली बार फ्रांस को पीछे छोड़कर आगे निकले हैं। और बहुत ही जल्द, 5, 4, 3 होंगे, देखिएगा।

आज दुनिया के सबसे तेज गति से, बड़ी economy में सबसे तेज गति से आगे बढ़ने वाला अगर कोई देश है तो उस देश का नाम हिन्दुस्तान है। तो बहुत तेजी से देश प्रगति कर रहा है, विकास नई ऊंचाइयों को पार कर रहा है।

आप लोगों का मन करता है कि नहीं करता है, हिन्दुस्तान आने का? हर दो महीने में? वाह! अभी देखिए, इस 2019 में बहुत सारे मौके हैं। मैं समझ गया कि मैं जब 2019 के मौके कह रहा था तो आपकी नजर कहां थी। लेकिन मैं तो कुछ और कहना चाहता था।

2019 के जनवरी में, 22-23 जनवरी, काशी में बनारस में, हमारा अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी भारतीय दिवस का कार्यक्रम है। दुनिया भर में जितने भारतीय हैं, वो दो साल में एक बार इकट्ठे होते हैं; इस बार काशी में है। और आपको मालूम है ना मैं काशी का प्रतिनिधि हूं। और इसलिए मैं जब निमंत्रण देता हूं तो स्पेशल निमंत्रण बन जाता है।

तो एक तो उसका लाभ मिलना चाहिए; बहुत बड़ी संख्या में जाना चाहिए प्रवासी भारतीय दिवस में। दूसरा 2019, 14 जनवरी, मकर संक्रांति, प्रयागराज में कुंभ मेला शुरू हो रहा है। दुनियाभर के लोग कुंभ के मेले में आते हैं। तो काशी में प्रवासी भारतीय दिवस, फिर वहां से प्रयाग जा करके प्रयागराज में और फिर 26 जनवरी को दिल्ली में। और उसके पहले एक और कार्यक्रम है, 20-21 को अहमदाबाद में गुजरात में Vibrant Gujarat Global Investor Summit है। यानी एक पूरा पैकेज बना करके आप जा सकते हैं, VibrantSummit गुजरात के लिए, फिर वहां से बनारस, बनारस से प्रयागराज, प्रयागराज से दिल्ली; और उसके बाद रह जाना है तो मई तक रह जाइए। हम आपके लिए काम ढूंढ कर निकाल देंगे।

आप इतनी बड़ी मात्रा में आए, आपने आशीर्वाद दिए, शुभकामनाएं दीं, मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूं। मैं दुनियाभर में फैले हुए भारतीय समुदाय से यही कहूंगा कि हिन्दुस्तान आप पर गर्व करता है। दुनिया में जहां-जहां भारतीय गए हैं, उन्होंने भारतीयों का नाम रोशन करने का काम किया है, भारतीयों का गौरव बढ़ाने का काम किया है। और मैं आज राष्ट्रपति जी के साथ बैठा था। आते ही एयरपोर्ट से ही कार्यक्रम में चला गया था। तो राष्ट्रपति जी ने आपकी इतनी तारीफ की, यानी भारतीय समुदाय के लिए वो गर्व अनुभव करते थे, और ये जब मैं सुनता था मुझे इतना आनंद आ रहा था, पूरी मेरे हिन्दुस्तान

से आने की पूरी थकान उतर गई। और एक बात उन्होंने बड़ी सटीक बताई, उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान के लोग यहां रहते हैं, वो हमारे देश की प्रगति में काफी कुछ contribute कर रहे हैं, अपना रोजी-रोटी कमाते हैं, लेकिन निरुपद्रवी है। उनकी तरफ से कोई तकलीफ ही नहीं होती है।

और दूसरा उन्होंने कहा, यहां जो भारतीय समाज रहता है उसकी विशेषता है वो यहां के सामाजिक काम में कोई-कोई मदद करते ही रहते हैं। यहां के लोगों की भलाई के लिए कुछ न कुछ करते हैं। देखिए ये जो आपके गुण हैं ना, इसी के कारण आपने लोगों का दिल जीता हुआ है। ये अपने-आप में एक बहुत बड़ी बात है कि जिस देश में हम आए हैं उस देश के लोग हमारे सेवा भाव से प्रभावित हैं, सेवा करने के हमारे स्वभाव से प्रभावित हैं।

कानून-नियमों का पालन करने वाली जिंदगी जीने वाले, किसी प्रकार का उपद्रव न करने वाले समाज के रूप में और ये खबर दुनिया भर से आती है जी। भारतीय समुदाय का ये व्यवहार दुनिया के किसी देश में किसी को अखरता नहीं है। अच्छे लगते हैं; भारतीय लोग लोगों को अच्छे लगते हैं। अनेक प्रकार से हर हिन्दुस्तानी दुनिया में जहां भी है वो राजदूत से भी बढ़ करके राष्ट्रदूत है।

जब मैंने आते ही आज आपकी तारीफ सुनी तो मेरी सारी थकान उतर गई, मुझे खुशी हुई और अब आपके दर्शन करने का मौका मिला तो और अच्छा लगा। मेरा आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद, आप यहां आए। बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

अतुल तिवारी/शाहबाज़/सतीश/ निर्मल शर्मा

(रिलीज़ आईडी: 1541477) आगंतुक पटल : 144

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Marathi , Tamil

प्रधानमंत्री कार्यालय

प्रधानमंत्री का किगाली कन्वेंशन सेंटर, रवांडा में भारत-रवांडा बिजनेस फोरम में भाषण - मूल पाठ (24 जुलाई 2018)

प्रविष्टि तिथि: 24 JUL 2018 8:23PM by PIB Delhi

Infrastructure हो quality life हो governance हो economic vibrancy हो self sufficient family भी हो इन सारे पहलुओं को एक साथ समेट कर के कैसे development किया जा सकता है। इसका बहुत ही सुंदर मॉडल मुझे देखने को मिला और हमारा मन भी उसमें इतना लग गया कि हमें यहां पहुंचने में देर हो गई।

मैं पहला भारत का प्रधानमंत्री हूं जिसे यहां आने का अवसर मिला है। लेकिन मुझे खुशी है कि भारत से बहुत बड़ा Business Delegation मेरे साथ आया है। वो इस बात का सबूत है कि भारत तो तेजी से grow कर रहा है। लेकिन हमारा मंत्र तो **सबका साथ सबका विकास** है और इसलिए हम तो grow करें लेकिन हमारे साथ जुड़कर के चलने वाले जो भी हो लोग सबको grow करने में मदद करें और हम साथ मिलकर के चलेगें। ये मूलभूत हमारी कल्पना है।

मैं खासकर के Indian Business Forum के जो लोग आए हैं। उनसे मैं कहना चाहूंगा। आप ये मत सोचिए कि आप सिर्फ रवांडा आए हैं। आज ये स्थिति है कि रवांडा आने का मतलब होता है कि आप पूरे अफ्रीका के द्वार खुल जाते हैं क्योंकि चाबी यहां पर है। पूरे अफ्रीका में रवांडा के मॉडल की चर्चा होती है उनके development की चर्चा होती है। उनके governance की चर्चा होती है। एक प्रकार से अफ्रीका में नया मिजाज बना है और राष्ट्रपति जी उसको Lead कर रहे हैं। आपका यहां आना मतलब आप एक देश की सीमा तक बंधे हुए नहीं है। मान के चलिए तो आपको और अधिक संभावनाएं भी नजर आएंगी और अधिक चुनौतियां भी आएंगी और अधिक अवसर भी आएंगे। और मैं मानता हूं कि आप इस अवसर को जाने नहीं देंगे।

मैं कल से देख रहा हूं कि राष्ट्रपति जी जज्बातों में हैं। Good governance, development and Progress of the people, Prosperity of the people, peace of the society in the society यही सारे विषय उनके केंद्र में हैं। हम भारत के लोगों के लिए सारी चीजें अनुकूल हैं। ये हमारी प्रकृति के साथ बहुत सूट करती है।

अब ये देश ऐसा है कि यहां पहले दुनिया का ध्यान जब अफ्रीका की तरफ नहीं था। किसी को मन नहीं लगता था यहां आने के लिए। उस समय हिंदुस्तान ने इस धरती पर आना पसंद किया था। अब गुजरात का ही जोधपुर का परिवार है। मैं समझता हूं वो end of the 19th century में यहां आया। और तब से लेकर के भारत के लोग यहां आए हैं। यहां के लोगों के जीवन के साथ घुलमिल गए हैं। यहां की विकास यात्रा के भागीदार बने हैं। ये ठीक है सब दुनिया का ध्यान लगा है। दुनिया का यहां आने का मन करता है। लेकिन हम उस समय यहां आए जिस समय सचमुच में यहां जरूरत थी। और आज हम इसलिए इसको आगे बढ़ाना चाहते हैं। कि हम मिल-बैठकर के दुनिया के काम आए। दुनिया में अभी भी जो पीछे

हैं। जिनको अवसर नहीं मिले उनके लिए कुछ करें। उस इरादे से हम दुनिया में जा रहे हैं। दुनिया के लोगों को साथ ले रहे हैं। दुनिया के साथ मिलकर के हम दुनिया के उस भूभाग की भलाई के लिए काम करना चाहते हैं।

राष्ट्रपति जी गुजरात आए थे उन्होंने गुजरात में काफी चीजें देखा, समझा। भारत में भी जब आए। कोई-कोई विकासशील चीजों को देखने की तरफ उनकी रुचि रही है। वो प्रत्यक्ष चीजों को देखते हैं, समझते हैं, लोगों को Invite करते हैं।

जिस देश के मुखिया का development के प्रति इतना commitment हो नई-नई चीजें को समझना, स्वीकारना और साबित करना जिनकी प्रवृत्ति हो। मैं समझता हूं ऐसे देश में काम करने के लिए कभी कोई रुकावट नहीं होती है। अनगिनत अवसर होते हैं। और आप एक खिड़की खोलोगे तो दूसरी खिड़की नजर आएगी। दूसरी खोलोगे तो दूसरा महल नजर आएगा। और आप आगे जाएंगे, बढ़ते जाएंगे, पाते जाएंगे। ये संभावनाएं मैं यहां साफ-साफ देख रहा हूं। और इसलिए भारत में भी उतनी ही संभावना है। रिवांडा में ऐसे Business के लोग, वे भी अगर भारत में grow करना चाहते हैं। भारत उनको हर प्रकार की सुविधा देने के लिए तैयार है। मैं उनको निमंत्रण देता हूं। लेकिन मैं भारत के लोगों से आग्रह करूंगा कि रिवांडा जिस आधुनिकता की दिशा में जा रहा है। चाहे Infrastructure हो या rural development हो चाहे economical activity हो। Small scale Industries का Network खड़ा करना चाहते हैं। cottage Industries का Network खड़ा करना चाहते हैं। यहां जो चीजें product हो उनका ग्लोबल मार्केट चाहते हैं। ये सारे विषय ऐसे हैं कि जिसमें भारत के व्यापार उद्योग जगत के लोग मिलकर के बहुत कुछ कर सकते हैं।

भारत में Make in India Movement चलाई है। इस Make in India Movement को भी हम रिवांडा के साथ शेयर कर सकते हैं, उनके साथ जुड़ सकते हैं। International solar alliance के माध्यम से हम climate change issues को tackle करने के लिए अगसर हैं लेकिन जिंदगी affordable बने उस पर सोलर एनर्जी कैसे काम आए। उस पर एक बहुत बड़ा अभियान चलाया जा रहा है। मैं चाहता हूं कि रिवांडा के लोग आगे आए। आज राष्ट्रपति जी के साथ travel कर रहा था। हमने एलईडी बल्ब का प्रयोग बताया

भारत में एलईडी बल्ब ने मीडिल क्लास लोगों का, मीडिल क्लास की फेमिली में इतना economically benefit किया है। जो बिजली का बिल आता था उससे आज वन थर्ड आने लगा है। अगर हम रिवांडा में भी एलईडी बल्ब का ये अभियान चले तो वहां के लोगों का energy saving होगा यहां गरीब मध्यम वर्ग के लोगों को फायदा होगा। और energy requirement कम होने के कारण energy के लिए जो प्लांट लगाने के पीछे जो रुपये खर्च होते हैं उसको भी कम किया जा सकता है। जो energy सेविंग होगा उसका उपयोग हम उद्योग में कर सकते हैं। जो कि आज domestic काम के लिए चला जाता है। यानी एक छोटी सी चीज भी कितना बड़ा परिवर्तन ला सकती है। इस दिशा में हम मिलकर के काम कर सकते हैं। dairy उद्योग की बहुत संभावना है। Milk revolution की संभावना है। भारत की उसमें महारथ है। हम उसके साथ जुड़कर, उनके साथ काम कर सकते हैं। यानी एक प्रकार से गांव से लेकर के राष्ट्र स्तर पर भारत के पास जो भी सामर्थ्य है। भारत उद्योग का जो सामर्थ्य है। भारत की जो व्यापारिक community के पास जो सामर्थ्य है। उसका भरपूर उपयोग रिवांडा के विकास में हम कर सकते हैं। रिवांडा एक हमारा मित्र देश है। यहां की हर चीज अगर आप बारीकी से देखेंगे तो भारत के लोग जिस कल्चर से जीते हैं उससे मिलती जुलती है। हर चीज में आपको अपनापन सा नजर आएगा। और जहां ये अपनापन हो, democratic values हो, Transparent governance हो, Efficiency हो, और committed leadership हो। उस देश में काम करना कितना सरल होता है वो भली-भांति हम समझ सकते हैं।

मैं कल एयरपोर्ट से उतरा हूं तब से अब तक उन्होंने पूरा समय हमारे लिए दिया है। ये बहुत rare होता है। उनकी पूरी सरकार मेरे साथ है, और दुनिया के देशों में जाना-आना तो होता रहता है। लेकिन एक-एक मिनट का कैसे उपयोग करना चाहिए। ये राष्ट्रपति जी से सीखना चाहिए। मुझे बहुत आनंद हुआ। और मैं फिर एक बार उनका धन्यवाद करता हूं और आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

अतुल कुमार तिवारी/कंचन/शाहबाज़/सतीश/ममता

(रिलीज़ आईडी: 1539982) आगंतुक पटल : 323

प्रधानमंत्री कार्यालय

यूगांडा की यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री का प्रेस वक्तव्य

प्रविष्टि तिथि: 24 JUL 2018 10:30PM by PIB Delhi

His Excellency President मुसेवेनी
Respected delegates,
Members of the Media,

यह मेरा सौभाग्य है कि दो दशकों के बाद भारत के प्रधानमंत्री की पहली द्विपक्षीय यात्रा के लिए मेरा युगांडा आना हुआ है। President मुसेवेनी भारत के बहुत पुराने मित्र हैं। मेरा भी उनसे बहुत पुराना परिचय है। 2007 में जब मैं गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में यहाँ आया था, उस यात्रा की मधुर यादें आज भी ताज़ा हैं। और आज राष्ट्रपति जी के उदार शब्दों, और हमारे गर्मजोशी भरे स्वागत-सत्कार और सम्मान के लिए मैं उनका हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

Friends,

भारत और युगांडा के बीच सदियों पुराने तथा ऐतिहासिक संबंध समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं। युगांडा हमेशा हमारे दिलों के करीब रहा है और रहेगा। युगांडा की आर्थिक प्रगति और राष्ट्रीय विकास के प्रयासों में भारत हमेशा साथ रहा है। Training, Capacity building, technology, infrastructure आदि हमारे सहयोग के प्रमुख क्षेत्र रहे हैं। भविष्य में भी हम यूगांडा की आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुसार अपना सहयोग जारी रखेंगे।

युगांडा की जनता के प्रति हमारी मित्रता की अभिव्यक्ति के रूप में भारत सरकार ने Uganda Cancer Institute, कमपाला को एक अत्याधुनिक कैंसर थेरेपी मशीन गिफ्ट करने का निर्णय लिया है। मुझे यह जानकर खुशी है कि इस मशीन से न केवल हमारे युगांडा के मित्रों की बल्कि पूर्वी अफ्रीकी देशों के मित्रों की भी जरूरत पूरी होगी। युगांडा में energy infrastructure और कृषि तथा डेरी sector के विकास के लिए हमने लगभग Two Hundred million dollars की दो lines of credit के प्रस्तावों को मंजूरी दी है। यह संतोष का विषय है कि रक्षा क्षेत्र में भी हमारा सहयोग आगे बढ़ रहा है। Military training में हमारे सहयोग का लम्बा इतिहास है। हम इस सहयोग को और अधिक मजबूत करने के लिए तैयार हैं। हमने यूगांडा सेना के लिए और civil कामों के लिए vehicles और ambulances देने का निर्णय भी लिया है। Trade and Investment में हमारे संबंध मजबूत हो रहे हैं। कल राष्ट्रपति जी के साथ मिल कर मुझे दोनों देशों के प्रमुख business leaders के साथ मिल कर इन संबंधों को और अधिक बल देने पर चर्चा करने का अवसर मिलेगा।

Friends,

यूगांडा में रहने वाले भारतीय मूल के समाज के प्रति राष्ट्रपति जी के स्नेह के लिए मैं उनका हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। एक कठिन समय के बाद, राष्ट्रपति जी के कुशल और मजबूत नेतृत्व में आज भारतीय मूल का समाज यूगांडा के सामाजिक और आर्थिक जीवन में भरपूर योगदान दे रहा है। मुझे प्रसन्नता है कि आज शाम भारतीय मूल के समाज के साथ मेरे कार्यक्रम में राष्ट्रपति जी स्वयं शामिल होंगे। उनके इस special जेसचर के लिए मैं पूरे भारत की ओर से उनका अभिनंदन करता हूँ। कल सुबह मुझे यूगांडा की संसद को संबोधित करने का सौभाग्य भी

मिलेगा. यह सौभाग्य पाने वाला मैं भारत का पहला प्रधानमंत्री हूँ. इस विशेष सम्मान के लिए मैं राष्ट्रपति जी का और यूगांडा की संसद का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ.

Friends,

भारत और यूगांडा, दोनों युवा-प्रधान देश हैं। दोनों सरकारों पर युवाओं की आकांक्षाओं को पूरा करने की ज़िम्मेदारी है। और इन प्रयासों में हम एक दूसरे के साथ सहयोग करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। सवा सौ करोड़ भारतीयों की ओर से मैं यूगांडा के लोगों की प्रगति और समृद्धि के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद।

AKT/SH/AK

(रिलीज़ आईडी: 1539999) आगंतुक पटल : 151

प्रधानमंत्री कार्यालय

10 वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में प्रधानमंत्री का भाषण

प्रविष्टि तिथि: 26 JUL 2018 6:39PM by PIB Delhi

Your Excellencies, President Cyril Ramaphosa,
President Temer,
President Putin,
President Xi Jinping,

आज दुनिया अनेक प्रकार के बदलावों से चौराहे पर है।

नई औद्योगिक technology और digital इंटरफ़ेस जिस नई दुनिया का निर्माण कर रहे हैं, वह एक अवसर भी है, और एक चुनौती भी।

नई प्रणालियों और उत्पादों से आर्थिक प्रगति के नए रास्ते खुलेंगे।

विकास और प्रगति के केंद्र में हमेशा लोग और मानवीय मूल्य सबसे महत्वपूर्ण हैं। इसलिए technology जगत में चौथी औद्योगिक क्रांति के उन परिणामों पर भी हमें गंभीर विचार करने की ज़रूरत है जो हम जैसे देशों की जनता और अर्थव्यवस्था पर दूरगामी प्रभाव डालेंगे।

Industry 4.0 (four point zero) का एक स्वागत योग्य परिणाम होगा अधिक नजदीकी संपर्क। The World will be flatter. जो इसका लाभ उठा सकेंगे वे अधिक प्रगति कर सकेंगे। अनेक वंचित वर्ग technology और विकास की कई अवस्थाओं के पार बड़ी छलांग लगा पाएंगे।

परन्तु, बढ़ती असमानताएं और तेज परिवर्तनों का समाज पर और मानवीय मूल्यों पर क्या प्रभाव होगा, यह कहना मुश्किल है।

Fourth Industrial Revolution में पूंजी से ज्यादा महत्व प्रतिभा का होगा। High-skill परन्तु अस्थायी work रोजगार का नया चेहरा होगा।

Industrial production, design, और manufacturing में मौलिक बदलाव आएंगे। Digital platforms, automation, और data-flows से भौगोलिक दूरियों का महत्व कम हो जाएगा। Digital platforms, e-commerce और marketplaces जब ऐसी technologies से जुड़ेंगे, तो एक नए प्रकार के industry और business leaders सामने आएंगे।

वे जिस प्रकार से और जितनी तेज़ी से जितनी संपत्ति, संसाधनों और विचारों पर नियंत्रण कर सकते हैं, या नियंत्रण खो सकते हैं, वह मानव के इतिहास में पहले कभी संभव नहीं था। हम यह नहीं जानते कि इसका परिणाम क्या होगा, लेकिन यह स्पष्ट है कि जो भी होगा गहरा और गंभीर होगा।

ऐसे में, मैं मानता हूँ कि BRICS framework में हमारी चर्चा हमें fourth Industrial revolution के लिए तैयार करने में मदद करेगी।

हमें इस बात पर चर्चा करनी चाहिए कि हम आने वाले समय के लिए अपने आप को किस तरह अच्छी तरह से तैयार कर सकते हैं।

एक अहम सवाल रोजगार के प्रकार और अवसरों का होगा। जहाँ तक हम देख सकते हैं, Traditional manufacturing हमारे युवाओं के लिए रोजगार का एक प्रमुख जरिया बनी रहेगी। दूसरी ओर, हमारे workers के लिए यह अत्यंत आवश्यक होगा कि वे अपनी skills में बदलाव ला सकें।

इसलिए, शिक्षा और कौशल विकास के लिए हमारी नज़रिए और नीतियों में तेज़ी से बदलाव लाना होगा।

School और University पाठ्यक्रम को इस तरह बनाना होगा जिससे ये हमारे युवाओं को भविष्य के लिए तैयार कर सकें। हमें बहुत सजग रहना होगा कि technology के क्षेत्र में आने वाले तेज़ बदलाव कम से कम उसी गति से पाठ्यक्रमों में स्थान पा सकें।

भारत में, इस उद्देश्य के लिए National Skill Development Mission की शुरूआत की गई है। इसका उद्देश्य हमारे युवाओं को relevant technical और vocational skills प्रदान करना है।

हमारी सरकार का जोर यह सुनिश्चित करने पर है कि affordable और quality technical, vocational तथा उच्च शिक्षा तक महिलाओं, पुरुषों और समाज के सभी वर्गों की समान रूप से पहुंच हो।

Excellencies,

नए अवसरों का उचित उपयोग एक ओर रोजगार मांगने वालों को रोजगार देने वाला बना सकता है। वहीं दूसरी ओर रोजगार विहीनों के लिए सामाजिक सुरक्षा की सशक्त व्यवस्था अनिवार्य होगी।

सामाजिक सुरक्षा लाभों की portability से डिजिटल युग में skilled workers की mobility सुनिश्चित होगी।

Excellencies,

बेहतर service delivery, productivity levels बढ़ाने और labour issues के बेहतर management के लिए technological innovations सहायता कर सकते हैं।

भारत में हमारा अनुभव इस मामले में बहुत सकारात्मक रहा है। श्रम कानूनों का पालन, सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य बीमा और अनेक सरकारी योजनाओं का लाभार्थियों को सीधा भुगतान technology द्वारा बेहतर delivery का उदाहरण है।

आज के समय में technology सबसे बड़ा disruptor बन चुकी है। Industry 4.0(four point zero) के परिणामों की कल्पना करना भी मुश्किल है।

इस प्रकार के disruption से globalization और migration को बेहतर multilateral coordination और collaboration के माध्यम से manage करना होगा।

खास तौर पर Unorganised sector में skilled, semi-skilled और un-skilled, सभी कामगारों को सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध कराना और भी महत्वपूर्ण हो जाएगा।

Cyber Security की चुनौतियों से और उनसे निबटने के लिए एकजुट हो कर काम करने के महत्त्व से हम सब भली भांति परिचित हैं। Industry 4.0 (four point zero) इन चुनौतियों और ज़रूरतों को और भी बढ़ा देगा।

भारत Fourth Industrial Revolution के विषयपर BRICS देशों के साथ मिलकर काम करना चाहता है। इस संबंध में हमें मिलकर best practices और policies साझा करनी चाहिए।

आजकल हो रहे और भविष्य में होने वाले technology परिवर्तनों का BRICS देशों और पूरी दुनिया के लिए महत्त्व को ध्यान में रखते हुए मैं यह सुझाव देना चाहूँगा कि हमारे मंत्रिइस विषय पर और विस्तार से विचार करें। और आवश्यकतानुसार विशेषज्ञों की मदद भी लें।

आप सभी का धन्यवाद।

AKT/SH/SK

(रिलीज़ आईडी: 1540349) आगंतुक पटल : 402

प्रधानमंत्री कार्यालय

ब्रिक्स आउटरीच डायलॉग में प्रधानमंत्री का सम्बोधन

प्रविष्टि तिथि: 27 JUL 2018 3:16PM by PIB Delhi

Excellency, President Cyril Ramaphosa,**BRICS के मेरे Colleagues,****विश्व भर से यहाँ उपस्थित मेरे सभी आदरणीय साथियों,**

सबसे पहले तो मैं President रामाफोसा को BRICS में Outreach प्रक्रिया को सशक्त बनाने के लिए बधाई देता हूँ। BRICS और अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बीच यह संवाद विकास के महत्वपूर्ण विषयों पर विचारों के आदान-प्रदान का एक अच्छा अवसर है। बड़ी संख्या में अफ्रीकी देशों की यहाँ उपस्थिति स्वाभाविक भी है, और प्रसन्नता का विषय भी। अफ्रीका के साथ भारत के संबंध ऐतिहासिक और गहरे हैं। अफ्रीका में स्वतंत्रता, विकास और शांति के लिए भारत के ऐतिहासिक प्रयासों के विस्तार को मेरी सरकार ने सबसे अधिक प्राथमिकता दी है। पिछले चार सालों में Heads of State and Government स्तर के 100 से भी अधिक आपसी यात्राओं और मुलाकातों के ज़रिये हमारे आर्थिक संबंध और विकास सहयोग नई ऊँचाइयों पर पहुंचे हैं। आज 40 से अधिक अफ्रीकी देशों में 11 billion dollars से अधिक की 180 lines of credit जारी हैं। हर वर्ष 8000 अफ्रीकी छात्रों को भारत में scholarships, 48 अफ्रीकी देशों में tele-medicine के लिए e-network, और private sector द्वारा 54 billion dollars के निवेश से, अफ्रीका में अफ्रीका की ज़रूरतों के आधार पर capacity building हो रही है। परसों Uganda की संसद को संबोधित करते हुए मैंने भारत और अफ्रीका की साझेदारी के 10 सिद्धांतों का विस्तार से वर्णन किया है। ये 10 सिद्धांत अफ्रीका की आवश्यकतानुसार विकास के लिए सहयोग, शांति और सुरक्षा के लिए सहकार, और हमारे लोगों के बीच सैंकड़ों साल पुराने रिश्तों को और मजबूत करने के लिए दिशा निर्देश हैं। African Continental Free Trade Area की महत्वपूर्ण पहल के लिए, मैं सभी अफ्रीकी देशों को हार्दिक बधाई देता हूँ। अफ्रीका में क्षेत्रीय economic integration के लिए हो रहे विविध प्रयासों का भी मैं स्वागत करता हूँ।

Excellencies,

Free Trade and Commerce ने पिछले तीन दशकों में hundreds of millions लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है। वैश्वीकरण और विकास के लाभ को लोगों तक पहुँचाना इस प्रक्रिया का प्रमुख हिस्सा था। और Global South इस प्रयास में बराबर का भागीदार था। 2008 के आर्थिक संकट के बाद से वैश्वीकरण के इस मूलभूत पहलू पर संरक्षणवाद के बादल मंडरा रहे हैं। इस प्रवृत्ति का और विकास दर में मंदी का सबसे गहरा प्रभाव हम जैसे उन देशों पर पड़ा है जो औपनिवेशिक काल में औद्योगिक प्रगति के अवसरों का लाभ नहीं उठा पाए। आज हम एक बार फिर ऐतिहासिक मोड़ पर हैं। Digital Revolution के कारण हमारे लिए नई संभावनाएं उत्पन्न हो रही हैं। और इसलिए, यह जरूरी है कि हम automation, artificial intelligence और big data analytics के कारण होने वाले बदलाव के लिए पूरी तरह तैयार रहें। इसके लिए digital infrastructure और skilled workforce में निवेश की जरूरत होगी। और साथ ही, inclusive global value chains, workers mobility, portable social security frameworks और efficient remittance corridors भी हमारी प्राथमिकताएं हैं।

Excellencies,

अपने साझेदार देशों के साथ उनके विकास के लिए भारत पूरा योगदान करता रहा है। South-South Cooperation के अंतर्गत अपने विकास अनुभवों को साझा करके हम अन्य विकासशील देशों में तकनीकी सहयोग, training एवं capacity building द्वारा हर संभव सहयोग हमारी विदेश नीति का अहम हिस्सा है। साथ ही, भागीदार देशों की आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुसार infrastructure, power, agriculture, education, health, Information Technology जैसे क्षेत्रों में स्वयं विकासशील देशों होते हुए भी भारत यथा सामर्थ्य आर्थिक सहायता भी देता रहा है। भारत की अपनी विकास यात्रा में South-South Cooperation एक प्रमुख आधार रहा है। अपने विकास अनुभव को विकासशील देशों के साथ साझा करना भारत के लिए हमेशा से प्राथमिकता रही है, और भविष्य में भी रहेगी।

आप सब का बहुत बहुत धन्यवाद।

AKT/SH/SK

(रिलीज़ आईडी: 1540436) आगंतुक पटल : 398

प्रधानमंत्री कार्यालय

चौथे बिम्सटेक शिखर सम्मेलन के पूर्ण सत्र में प्रधानमंत्री का वक्तव्य

प्रविष्टि तिथि: 30 AUG 2018 5:49PM by PIB Delhi

Your Excellency, राइट ओनरेबल**प्रधानमंत्री ओली जी,**

बिम्सटेक सदस्य देशों से आए मेरे सभी साथी leaders, सबसे पहले तो मैं इस चौथे बिम्सटेक शिखर सम्मलेन की मेजबानी और सफल आयोजन के लिए नेपाल सरकार का, और प्रधानमंत्री ओली जी का हृदय से आभार प्रकट करना चाहता हूँ। हालांकि मेरे लिए यह पहला बिम्सटेक शिखर सम्मलेन है, लेकिन 2016 में मुझे गोवा में BRICS Summit के साथ बिम्सटेक रिट्रीट host करने का अवसर मिला था। गोवा में हमने जो Agenda For Action तय किया था, उसके अनुरूप हमारी teams ने प्रशंसनीय follow-up action लिया है। और उसमें प्रमुख बातें जो शामिल हैं:

पहली वार्षिक बिम्सटेक Disaster (डिजास्टर) Management Exercise का आयोजन।

राष्ट्रीय सुरक्षा प्रमुखों की दो मुलाकातें।

बिम्सटेक Trade फेसीलिटेशन Agreement पर चर्चा में प्रगति।

बिम्सटेक Grid (ग्रिड) इंटर-कनेक्शन के विषय पर समझौता।

और इसके लिए मैं सभी देशों के delegations का हृदय से अभिनंदन करता हूँ।

Excellencies

हम सभी देश सदियों से सभ्यता, इतिहास, कला, भाषा, खान-पान और हमारे साझा संस्कृति के अटूट बंधनों से जुड़े हुए हैं। इस क्षेत्र के एक ओर महान हिमालय पर्वत श्रृंखला है, और दूसरी ओर हिन्द और प्रशांत महासागरों के बीच स्थित बंगाल की खाड़ी है। बंगाल की खाड़ी का यह क्षेत्र हम सभी के विकास, सुरक्षा और प्रगति के लिए विशेष महत्त्व रखता है। और इसलिए, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि भारत की "नेबरहुड First" और "Act East", दोनों नीतियों का संगम इसी बंगाल की खाड़ी के क्षेत्र में होता है।

Excellencies,

हम सभी विकासशील देश हैं। अपने-अपने देशों में शांति, समृद्धि और खुशहाली हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता है। लेकिन आज के inter- -connected विश्व में यह काम कोई अकेले नहीं कर सकता है। हमें एक दूसरे के साथ चलना है। मैं मानता हूँ कि सबसे बड़ा अवसर है Connectivity का - Trade

connectivity, Economic connectivity, Transport connectivity, Digital connectivity, और पीपल-टू-पीपल connectivity – सभी आयामों पर हमें काम करना होगा। बिम्सटेक में coastal shipping और motor vehicles समझौतों को आगे बढ़ाने के लिए हम भविष्य में भी मुलाकात की मेज़बानी कर सकते हैं। हमारे एंटरप्रेनयर्स के बीच संपर्क और connectivity बढ़ाने के लिए भारत बिम्सटेक Start Up Conclave host करने के लिए तैयार हैं। और हम भलीभांति जानते हैं कि ये स्टार्टअप का युग और हमारे युवा पीढ़ी का उत्साह इसकी अपनी एक ताकत है हम इसको मिलकर बल दे सकते हैं। हम सभी देश अधिकांशतः कृषि प्रधान हैं, और Climate Change की आशंकाओं से जूझ रहे हैं। इस संदर्भ में कृषि अनुसन्धान, शिक्षा और विकास पर सहयोग के लिए भारत, Climate Smart Farming Systems के विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन का आयोजन करेगा। Digital connectivity के क्षेत्र में भारत अपने National Knowledge Network को श्रीलंका, बांग्लादेश, भूटान और नेपाल में बढ़ाने के लिए पहले से ही प्रतिबद्ध है। हम इसे म्यांमार और थाईलैंड में भी बढ़ाने का प्रस्ताव करते हैं। मैं आशा करता हूँ कि सभी बिम्सटेक देश इस वर्ष October में नई दिल्ली में आयोजित की जा रही India Mobile Congress में भागीदार होंगे। इस Congress में बिम्सटेक मिनिस्टीरयल कोनक्लेव भी शामिल है। बिम्सटेक सदस्य देशों के साथ connectivity बढ़ाने में भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र की अहम भूमिका होगी। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास के लिए Science and Technology Interventions in the North Eastern Region नामक एक पहल है। हम इस कार्यक्रम को बिम्सटेक के सदस्य देशों के लिए extend करने का प्रस्ताव रखते हैं। इसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में उर्जा, waste management, कृषि और capacity building को प्रोत्साहन दिया जा सकता है। साथ ही, भारत के North Eastern Space Application Centre में बिम्सटेक सदस्य देशों के शोधकर्ताओं, छात्रों और professionals के लिए हम चौबीस scholarships भी देंगे।

Excellencies,

इस क्षेत्र के लोगों के बीच सदियों पुराने संपर्क हमारे संबंधों को एक मजबूत नींव प्रदान करते हैं। और इन संपर्कों की एक विशेष कड़ी है बौद्ध धर्म और चिंतन। August Twenty Twenty में भारत International Buddhist कोनक्लेव की मेज़बानी करेगा। मैं सभी बिम्सटेक सदस्य देशों को इस अवसर पर Guest of Honour के रूप में भागीदारी का निमंत्रण देता हूँ। हमारी युवा पीढ़ी के बीच संपर्क को प्रोत्साहन देने के लिए बिम्सटेक Youth Summit और बिम्सटेक Band Festival के आयोजन का प्रस्ताव भारत रखना चाहता है। इनके साथ हम बिम्सटेक Youth Water Sports का आयोजन भी कर सकते हैं। बिम्सटेक देशों के युवा छात्रों के लिए नालंदा विश्वविद्यालय में तीस scholarships और जिपमर institute में advanced medicine के लिए बारह research fellowships भी दी जाएंगी। साथ ही, भारत के आईटेक कार्यक्रम के तहत पर्यटन, पर्यावरण, disaster management, renewable energy, कृषि, trade और W.T.O जैसे विषयों पर सौ short term training courses भी offer किये जाएंगे। बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में कला, संस्कृति, सामुद्रिक कानूनों एवं अन्य विषयों पर शोध के लिए हम नालंदा विश्वविद्यालय में एक Centre for Bay of Bengal Studies की स्थापना भी करेंगे। इस केंद्र में हम सभी देशों की भाषाओं के एक-दूसरे से जुड़े तारों के बारे में भी research की जा सकती है। हम सभी देशों के अपने-अपने लंबे इतिहास, और इतिहास से जुड़े पर्यटन के potential का पूरी तरह लाभ उठाने के लिए ऐतिहासिक इमारतों और स्मारकों के पुनरुत्थान के लिए हम सहयोग कर सकते हैं।

Excellencies,

क्षेत्रीय integration तथा आर्थिक प्रगति और समृद्धि के लिए हमारे इन साझा प्रयासों की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि हमारे क्षेत्र में शांति और सुरक्षा का वातावरण हो। हिमालय और बंगाल की खाड़ी से जुड़े हमारे देश, बार-बार प्राकृतिक आपदाओं का सामना करते रहते हैं। कभी बाढ़, कभी साईक्लोन, कभी भूकंप। इस सन्दर्भ में, एक दूसरे के साथ humanitarian assistance और disaster relief प्रयासों में हमारा सहयोग और समन्वय बहुत ही आवश्यक है। हमारे क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति वैश्विक सामुद्रिक trade routes से जुड़ी है, और हम सभी की अर्थव्यवस्थाओं में भी Blue Economy का एक विशेष महत्व है। साथ ही, आने वाले digital युग में हमारी अर्थव्यवस्थाओं के लिए cyber economy का महत्व भी अधिकाधिक बढ़ेगा। और इसलिए, अगले महीने भारत में आयोजित की जा रही बिम्सटेक Multi-national Military Field Training Exercise और थल सेना प्रमुखों की कोनक्लेव का मैं स्वागत करता हूँ। भारत बिम्सटेक देशों की एक Tri Services Humanitarian Assistance and Disaster Relief Exercise की मेजबानी भी करेगा। दूसरी वार्षिक बिम्सटेक Disaster Management Exercise की मेजबानी के लिए भी भारत तैयार है। हम disaster management के क्षेत्र में कार्यरत officials के लिए capacity building में भी सहयोग करने के लिए तैयार हैं। भारत Blue Economy पर सभी बिम्सटेक देशों के युवाओं का एक Hackathon आयोजित करेगा। इससे Blue Economy की संभावनाओं और सहयोग पर focus किया जा सकेगा।

Excellencies,

हममें से कोई भी देश ऐसा नहीं है जिसने आतंकवाद और आतंकवाद के networks से जुड़े ट्रान्स-नेशनल अपराधों और drug trafficking जैसी समस्याओं का सामना नहीं किया हो। नशीले पदार्थों से संबंधित विषयों पर हम बिम्सटेक frame-work में एक conference का आयोजन करने के लिए तैयार हैं। यह स्पष्ट है कि ये समस्याएं किसी एक देश की law and order समस्याएं नहीं हैं। इनका सामना करने के लिए हमें एकजुट होना होगा। और इसके लिए हमें यथोचित कानूनों और नियमों का frame-work खड़ा करना होगा। इस संदर्भ में, हमारे law-makers, विशेष रूप से महिला सांसदों का आपसी संपर्क सहायक साबित हो सकता है। मेरा प्रस्ताव है कि हमें बिम्सटेक Women पारला-मेनटेरयंस Forum की स्थापना करनी चाहिए।

Excellencies,

पिछले दो दशकों में बिम्सटेक ने उल्लेखनीय प्रगति की है। परन्तु अभी हमारे सामने बहुत लम्बी यात्रा है। हमारे आर्थिक integration को और गहरा करने के लिए अभी बहुत संभावनाएं हैं। और यही हमारे लोगों की हमसे अपेक्षा भी है। यह चौथा शिखर सम्मलेन, हमारे जनमानस की अपेक्षाओं, आशाओं और अभिलाषाओं को पूरा करने की दिशा में ठोस कदम उठाने का एक बहुत अच्छा अवसर है। इस चौथे summit का डिक्लेरेशन बहुत से महत्वपूर्ण निर्णयों को अपने में समेटे हुए है। इनसे बिम्सटेक के संगठन और प्रक्रिया को बहुत बल मिलेगा। साथ ही, बिम्सटेक की प्रक्रियाओं को ठोस रूप और मजबूती के लिए इस summit की सफलता एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगी। इसके लिए मैं मेजबान देश, नेपाल सरकार, प्रधानमंत्री ओली जी, और सभी भागीदार leaders के नेतृत्व का हृदय से अभिनंदन करता हूँ। आगे भी भारत आपके साथ कंधे से कंधा मिला कर चलने के लिए प्रतिबद्ध है।

धन्यवाद।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/कंचन पटियाल/बाल्मीकि महतो

(रिलीज़ आईडी: 1544550) आगंतुक पटल : 523

प्रधानमंत्री कार्यालय

बांग्लादेश में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से तीन परियोजनाओं के संयुक्त रूप से उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 10 SEP 2018 6:51PM by PIB Delhi

Your Excellency शेख हसीना, Prime Minister of Bangladesh,

भारत और बांग्लादेश के विदेश मंत्री,

सुश्री ममता बनर्जी जी, Chief Minister of West Bengal,

बिप्लब कुमार देब जी, Chief Minister of Tripura,

कुछ दिन पहले काठमांडू में बिस्मटेक शिखर सम्मलेन के समय शेख हसीना जी से मेरी मुलाकात हुई थी। उससे पहले भी हम May में शान्तिनिकेतन में, और April में Commonwealth Summit के समय London में मिले थे।

और मुझे प्रसन्नता है कि आज video conference के माध्यम से आपसे एक बार फिर रूबरू होने का अवसर मिला।

मैंने पहले भी कई बार कहा है कि पड़ोसी देशों के leaders के साथ पड़ोसियों जैसे ही संबंध होने चाहिए। जब मन किया तो बात होनी चाहिए, जब चाहें visits होने चाहिए। इन सब विषयों पर हमें protocol के बंधन में नहीं रहना चाहिए।

और यह निकटता प्रधानमंत्री शेख हसीना जी के साथ मेरे संपर्क में साफ़-साफ़ दिखाई देती है। अनेक मुलाकातों के अलावा यह हमारी चौथी video conference है, और निकट भविष्य में एक और video conference भी होगी।

इन video conferences की सबसे बड़ी बात है कि हम दोनों देशों के सहयोग के projects का शुभारंभ या उद्घाटन किसी VIP visit का मोहताज़ नहीं है।

Excellency, जब भी हम connectivity की बात करते हैं, तो मुझे हमेशा आपके 1965 के पहले की connectivity बहाल करने के vision का खयाल आता है।

और मेरे लिए बहुत प्रसन्नता का विषय है कि हम पिछले कुछ वर्षों में लगातार इस दिशा में कदम उठा रहे हैं।

आज हमने अपनी Power Connectivity बढ़ाई है, और Railway Connectivity को और अधिक गहन करने के लिए दो projects शुरू किए हैं।

2015 में जब मैं बांग्लादेश आया था, तब हमने बांग्लादेश को 500 megawatt की अतिरिक्त बिजली आपूर्ति करने का निर्णय लिया था। और इसके लिए पश्चिम बंगाल से बांग्लादेश का transmission link काम में लिया जा रहा है। इस काम को पूरा करने में सहयोग के लिए मैं मुख्यमंत्री सुश्री ममता बनर्जी का अभिनंदन करता हूँ।

इस project के पूरा होने से अब 1.16 gigawatt बिजली भारत से बांग्लादेश को supply की जा रही है। मैं समझता हूँ कि megawatt से gigawatt का यह quantum jump हमारे संबंधों के शोनाली अध्याय का प्रतीक है।

Railway के क्षेत्र में भी हमारी connectivity लगातार बढ़ रही है। इसमें बांग्लादेश की आंतरिक connectivity, और भारत के साथ connectivity, हमारे सहयोग के प्रमुख पहलू हैं।

अखौड़ा-अगरतला की rail connectivity का काम पूरा होने पर हमारी cross-border connectivity में एक और कड़ी जुड़ जाएगी। इस project में सहयोग के लिए मैं मुख्यमंत्री श्री बिप्लब कुमार देब का अभिनंदन करता हूँ।

प्रधानमंत्री शेख हसीना जी ने बांग्लादेश के विकास के लिए महत्वकांक्षी लक्ष्य तय किये हैं – 2021 तक middle income country, और 2041 तक developed country बनने के उनके vision को साकार करने में सहयोग करना हमारे लिए गर्व का विषय है।

मुझे पूरा विश्वास है कि जैसे-जैसे हम अपने संबंध बढ़ाएंगे और लोगों के बीच रिश्ते मज़बूत करेंगे, वैसे वैसे हम विकास और समृद्धि के नए आसमान भी छूएंगे।

इस काम में सहयोग के लिए और आज के इस कार्यक्रम में उपस्थिति के लिए मैं प्रधानमंत्री शेख हसीना जी का, और पश्चिम बंगाल तथा त्रिपुरा के मुख्यमंत्रियों का हृदय पूर्वक आभार प्रकट करता हूँ।

धन्यवाद।

एकेटी/एसएच/एसबीपी

(रिलीज़ आईडी: 1546300) आगंतुक पटल : 119

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Marathi , Assamese , Tamil

प्रधानमंत्री कार्यालय

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की यात्रा के दौरान भारत के प्रधानमंत्री द्वारा मीडिया वक्तव्य

प्रविष्टि तिथि: 05 OCT 2018 4:24PM by PIB Delhi

Your Excellency

रूसी संघ के राष्ट्रपति और मेरे घनिष्ठ मित्र व्लादीमिर व्लादीमिरोविच, दोनों देशों के सम्माननीय प्रतिनिधि, नमस्कार।

दोब्री दीन।

उन्नीसवें वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए भारत में राष्ट्रपति पूतिन तथा उनके delegation का स्वागत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।

हम एक ऐसे देश के राष्ट्रपति के रूप में आपका स्वागत कर रहे हैं, जिस के साथ हमारे अद्वितीय संबंध हैं। इन संबंधों के लिए आपने अमूल्य व्यक्तिगत योगदान दिया है।

राष्ट्रपति पूतिन द्वारा Sochi में आयोजित की गई अनौपचारिक शिखर सम्मेलन की स्मृतियां मेरे मन में ताज़ा हैं। उस खास मुलाकात से हम दोनों को खुलकर गहन चर्चा करने का अवसर प्राप्त हुआ।

राष्ट्रपति जी,

रूस के साथ अपने संबंधों को भारत सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। तेजी से बदलते हुए इस विश्व में हमारे संबंध और अधिक प्रासंगिक हो गए हैं।

उन्नीस शिखर सम्मेलनों की निरन्तर श्रृंखला से हमारी Special और Privileged Strategic Partnership को लगातार नई ऊर्जा और दिशा मिली है। और वैश्विक मामलों पर हमारे सहयोग को नए मायने एवं मकसद भी मिले हैं।

हमारे सहयोग को आपकी यात्रा से strategic direction मिला है। आज हमने ऐसे महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं, जो दीर्घकालिक दृष्टि से हमारे संबंधों को और अधिक ताकतवर बनाएँगे।

Human resource development से लेकर natural और energy resources तक, trade से लेकर investment तक, नाभिकीय ऊर्जा के शान्तिपूर्ण सहयोग से लेकर सौर ऊर्जा तक, technology से लेकर tiger कन्ज़र्वेशन तक, आर्कटिक से लेकर Far East तक, और सागर से लेकर अन्तरिक्ष तक भारत और रूस के सम्बन्धों का और भी विशाल विस्तार होगा। यह विस्तार हमारे सहयोग को अतीत के कुछ गिने-चुने दायरों के पार ले जाएगा।

साथ ही, हमारे संबंधों के महत्वपूर्ण आधार स्तंभ और मज़बूत होंगे।

भारत की विकास यात्रा में रूस हमेशा हमारे साथ रहा है। हमारा अंतरिक्ष में अगला लक्ष्य भारत के Gaganyaan में भारतीय अंतरिक्षयात्री को भेजना है। मुझे बहुत खुशी है कि आपने इस Mission में रूस के पूरे सहयोग का आश्वासन दिया है।

युवाओं में हमारे देशों के भविष्य का कायाकल्प करने की क्षमता है। मुझे इस बात की खुशी है कि भारत एवं रूस के प्रतिभा संपन्न बच्चे सम्मिलित रूप से अपने innovative ideas का प्रदर्शन आज दोपहर बाद करेंगे। ये ideas उन्होंने मिलजुल कर विकसित किए हैं।

हम भारत के फ्लैगशिप कार्यक्रमों में और Business के व्यापक अवसरों में रूस की भागदारी का स्वागत करते हैं। मुझे इस बात की भी खुशी है कि अब से कुछ समय बाद हम India-Russia Business Summit में भाग लेंगे। इसमें दोनों देशों से करीब 200 प्रमुख आर्थिक उद्यमी भाग ले रहे हैं।

भारत एवं रूस पारस्परिक हित के सभी अंतर्राष्ट्रीय मामलों में घनिष्ठता से सहयोग करते रहे हैं। President Putin तथा मैंने इन पर भी विस्तार से चर्चा की है।

भारत और रूस तेजी से बदलते हुए विश्व में Multi-polarity (मल्टी-पोलेरिटी) और Multi-lateralism (मल्टी-लेटरलिस्म) को सुदृढ़ करने पर एकमत हैं। आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष, अफगानिस्तान तथा Indo Pacific के घटनाक्रम, जलवायु परिवर्तन, SCO, BRICS जैसे क्षेत्रीय संगठनों एवं G20 तथा ASEAN जैसे बहुपक्षीय संगठनों में सहयोग करने में हमारे दोनों देशों के साझा हित हैं। हम अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में अपने लाभप्रद सहयोग और समन्वय को जारी रखने पर सहमत हुए हैं।

मैं President Putin द्वारा रूस के सुदूर पूर्व के विकास के लिए उठाए गए कदमों से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। भारत इस क्षेत्र में सहयोग के लिए तत्पर है।

आज लिए गए निर्णयों से हमारे सहयोग में और वृद्धि होगी तथा चुनौतियों भरे विश्व में शांति एवं स्थिरता की बहाली में योगदान मिलेगा।

भाइयो बहनो,

भारत और रूस के सम्बन्धों की शक्ति का स्त्रोत सामान्य जन में एक दूसरे के प्रति सद्भाव और मैत्री है। हमने आज ऐसे कई प्रयासों पर विचार किया है जिनसे people-to-people सम्बन्ध और मज़बूत हों। और दोनों देशों के लोगों की, विशेषतः युवाओं की एक-दूसरे के बारे में जानकारी और आपसी समझ और बढ़े। इससे भारत-रूस के सम्बन्धों के भविष्य की एक नई नींव का निर्माण होगा।

Friends,

मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि भारत- रूस मैत्री अपने आप में अनूठी है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस विशिष्ट रिश्ते के लिए President Putin की प्रतिबद्धता से इन संबंधों को और भी ऊर्जा मिलेगी। और हमारे बीच प्रगाढ़ विश्वास एवं मैत्री और सुदृढ़ होगी और हमारी Special and Privileged Strategic Partnership को नई बुलंदियां प्राप्त होंगी।

Thank you.

स्पासिबा.

AKT/AP/SK

(रिलीज़ आईडी: 1548730) आगंतुक पटल : 337

प्रधानमंत्री कार्यालय

मेक इन इंडिया : अफ्रीका में भारत-जापान साझेदारी एवं डिजिटल पार्टनरशिप सेमिनार में प्रधान मंत्री का व्याख्यान

प्रविष्टि तिथि: 29 OCT 2018 1:19PM by PIB Delhi

जापान और भारत से बड़ी संख्या में उपस्थित बिजनेस लीडर्स. CEOs, केडाइनडरन, जेट्रो, NIKKI, CII और NASCOM के वरिष्ठ पदाधिकारीगण।

जापान आकर यहां की बिजनेस कम्युनिटी से बात करना मुझे हमेशा से ही बहुत खुशी देता है। मुझे आज भी याद है करीब 10 साल से मेरी यहां के उद्यमियों से विस्तार से चर्चा होती रही है। मैंने आपके विजन को समझा था, अनेक नई नई बातें आपसे सीखा था। पिछले दशक में भारत के प्रति आपकी आत्मीयता समय के साथ निरंतर बढ़ती रही है।

भारत सरकार का हर स्तर पर ये प्रयास है कि देश में Business Environment को इस तरह बदला जाय कि वहां पर आपको Ease of Doing business और Ease of Living का एहसास हर कदम हो।

साथियों,

कुछ साल पहले मैंने भारत में मिनी जापान बनाने की बात की थी। मेरे लिए ये बहुत खुशी की बात है कि आज आप उससे भी बड़े व्यापक स्तर पर भारत में काम कर रहे हैं।

कई दशकों से जहां करीब 1150 कंपनियां भारत में थीं, वहीं साल 2014 से लेकर 2017 के बीच जापान की 200 से ज्यादा नई कंपनियों ने भारत में ऑपरेट करना शुरू किया है। ये संख्या दिनोदिन बढ़ती जा रही है। इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं।

आज जापान की कंपनियाँ भारत में कार Manufacturing से लेकर Communication; Infrastructure से लेकर, सर्विसेस तक में साथ मिल कर के काम हो रहा है। भारत एवं जापान के बीच का ये सुखद सफर और भी आनंददायक और परिणामदायी बने इसके लिए भी मेरी तरफ से आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

साथियों,

भारत और जापान के Co-Existence की भावना विश्वास एवं हमारी साझा विरासत पर आधारित है, हमारी आत्मीयता पर आधारित है। दोनों देशों के बीच घनिष्ठ रिश्तों की नींव में यही भावना एवं संस्कार है।

यही कारण है कि साल 2014 में प्रधानमंत्री के तौर पर हुई मेरी पहली यात्रा के दौरान ही हम दोनों देशों ने तय किया कि अपने रिश्तों को एक नई ऊँचाई पर ले जाएंगे, इसे अपग्रेड करके स्पेशल स्ट्रेटेजिक एंड ग्लोबल पार्टनरशिप के स्तर पर ले जाएंगे। उसके बाद से जापान के माननीय प्रधानमंत्री आबे और मेरा आपस में निरंतर मिलना-जुलना होता रहा है। प्रधानमंत्री श्रीमान आबे और हमने मिल करके दोनों देशों के बीच व्यापारिक कार्य में आने वाली बहुत सी अड़चनों को दूर किया है।

साथियों,

जापान सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में हमारे बहुत से महत्वाकांक्षी इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स में सहायता दी है। हमारा वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर अब पूरा होने वाला है। ये एक साल बाद पूरी तरह Operational होने की स्थिति में पहुंच जाएगा। इसी के साथ जुड़ा हुआ हमारा दिल्ली-मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर का जो प्रोजेक्ट है, वो भी जापान सरकार और जापान की कंपनियों के Collaboration के साथ बखूबी आगे बढ़ रहा है।

माननीय आबे जी की पिछली भारत यात्रा के दौरान हमने हाई स्पीड रेल प्रोजेक्ट पर साथ काम करना निश्चित किया था। भारत का पहला प्रोजेक्ट मुंबई-अहमदाबाद के बीच शुरू हुआ है और इस पर भी तेज गति से काम चल रहा है।

साथियों,

भारत में मेरी सरकार बने हुए लगभग साढ़े चार साल हो चुके हैं। इस दौरान, बिजनेस से जुड़े जिस कार्य को मैंने अपनी Priority list में सबसे ऊपर रखा, वो है - Ease of Doing Business। इसका नतीजा अब दुनिया के सामने है। साल 2014 में जब मैंने सरकार की बागडोर संभाली थी उस समय World Bank की Ease of Doing Business रैंकिंग में भारत का स्थान 142वां होता था। अब हम सौवी रैंक पर हैं और अब भी रैंकिंग में सुधार के लिए बहुत व्यापक स्तर पर काम कर रहे हैं। फेडरल गवर्नमेंट के स्तर पर, स्टेट गवर्नमेंट के स्तर पर, लोकल गवर्नमेंट के स्तर पर हम एक के बाद एक कदम उठा रहे हैं। आने वाले वर्षों में हमें इसके और भी अच्छे परिणाम मिलेंगे।

इतना बड़ा सुधार, त्वरित और निर्णायक रूप से लिए गए फैसलों से, और बेवजह के नियमों में फेरबदल से संभव हुआ है।

मैं यहां आपको एक और महत्वपूर्ण बात बताना चाहता हूं। भारत सरकार ने Ease of Doing business को और बढ़ावा देने के लिए अपने 36 राज्यों और Union Territories की Ranking भी करनी शुरू कर दी है।

इसका एक बड़ा प्रभाव ये हुआ है कि अब राज्यों में भी Investment को लेकर Healthy Competition शुरू हो गया है जिसके बहुत सुखद परिणाम दिखने लगे हैं।

साथियों,

पूंजी निवेश हमारे देश की जरूरत है। Ease of Doing Business के क्षेत्र में हम इसीलिए निष्ठापूर्वक कदम उठा रहे हैं। पूंजी निवेश होगा तभी बेरोजगारों के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे, देश के Infrastructure में सुधार होगा, कृषि, खनिज, समुद्री संपत्तियां एवं अन्य तमाम प्राकृतिक संपत्तियों में Value Addition होगा।

अपने नागरिकों को Ease of Living देने की हमारी कोशिश Ease of Doing Business का ही विस्तार है।

इसलिए एक महाअभियान चलाकर हम लोगों ने Ease of Doing Business के क्षेत्र में काम किए हैं। इस महाप्रयास के चलते अन्य उपलब्धियां भी हमें मिली हैं:

- World Intellectual Property Organisation (WIPO) की Global Innovation Index की रैंकिंग में 21 स्थान ऊपर आ गए हैं।
- World Economic Forum की Global Competitiveness Index में हम 2 साल में 31 पायदान ऊपर चढ़े हैं।
- UNCTAD द्वारा list किए गए 10 FDI destinations में मजबूती से भारत का नाम है।
- पिछले कुछ साल में FDI के क्षेत्र में हमने काफी Reforms किए हैं। आज हम FDI की दृष्टि से सबसे खुली अर्थव्यवस्था बन गए हैं। 90 प्रतिशत से ज्यादा Permission अब Automatic Route पर दी जाती है।
- इसका परिणाम ये है कि हमारी FDI पिछले 3 साल में 36 Billion यूएस डॉलर से बढ़कर 60 Billion यूएस डॉलर हो गई है।
- आज हम विश्व की सबसे तेज गति से विकास करने वाली बड़ी अर्थव्यवस्था हैं।
- अब हम 2.59 Trillion यूएस डॉलर की अर्थव्यवस्था होने के साथ छठे नंबर की अर्थव्यवस्था हैं और शीघ्र ही पांचवें नंबर की अर्थव्यवस्था होने की ओर अग्रसर हैं।

घरेलू स्तर पर हमने जिस Commitment के साथ सुधार किए हैं उनके चलते भारतीय अर्थव्यवस्था:

- Informal से Formal Economy बन रही है।
- Transactions अब On Paper ही नहीं बल्कि Online होने लगे हैं जिसके चलते स्थायित्व एवं पारदर्शिता बढ़ी है।
- देश भर में GST लागू होने की वजह से Transportation और आसान हुआ है और Logistics सेक्टर और मजबूत हुआ है।
- समय के साथ हम Corporate Tax को कम करते जा रहे हैं। इसमें इस बात का खास ध्यान रखा जा रहा है कि MSME यानि छोटे उद्योगों को भरपूर फायदा मिले।

नीतियों में Stability और Transparency की जो व्यापारी वर्ग की मांग हुआ करती थी वह अब भारत सरकार की पहचान बन चुकी है।

साथियों,

प्रधानमंत्री के तौर पर अपनी पहली यात्रा के दौरान ही मैंने Japan plus नाम की एक संस्था खड़ी करने की बात की थी। मुझे यह कहते हुए बेहद खुशी हो रही है कि जेट्रो ने तथा आप सबने उस व्यवस्था का उपयोग किया है।

इस अवसर पर मैं एक और Information शेयर करना चाहूंगा। Japan plus हमारी Invest India के साथ मिलकर काम करती है। इस Invest India को कुछ दिन पहले ही अपने बेहतरीन कार्यों के लिए युनाइटेड नेशंस ने वैश्विक सम्मान से पुरस्कृत किया है।

साथियों,

भारत में तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था, तेजी से बढ़ता हुआ Middle Class, तेजी से बढ़ती हुई Urban Population और हमारी Young Demography, जापान की कंपनियों के काम करने के लिए बहुत व्यापक अवसर प्रदान करते हैं।

मैं कुछ उदाहरण दूँ तो-

भारत में हमलोग पिछले चार साल से Make in India जैसे विशिष्ट कार्यक्रमों के तहत भारत को Manufacturing एवं Research के क्षेत्र में Global Hub बनाने की तरफ आगे बढ़े हैं।

भारत में विशेष करके जापान की MSME कंपनियों के काम करने की बहुत ज्यादा संभावनाएं हैं। मैं यहां ये कहना चाहता हूँ कि भारत आने वाली हर बड़ी कंपनी का तो स्वागत है ही पर MSME के जरिए भी जापानी बिजनेस लीडर्स अपने व्यवसाय को नई उंचाई तक ले जा सकते हैं। MSME आने से कम समय में उसके परिणाम दिखने लगते हैं।

भारत में व्यापार करने का एक फायदा Low cost manufacturing भी है। उसके पीछे भारत में Competitive Labour Cost एक बहुत बड़ी ताकत है।

उसी तरह से हमारी IT industry एक बहुत बड़ी शक्ति है। मैंने पहले भी यहां आकर कहा है, हमारा Software और आपका Hardware मिल जाए, तो मैं समझता हूँ की हम दुनिया के अंदर miracle कर सकते हैं।

इतना ही नहीं, भारत technology के क्षेत्र में होने वाले नए आविष्कारों जैसे Artificial Intellingence, Internet of Things, 3D Printing, Robotics आदि के जरिए Industry 4.0 की तरफ तेजी से आगे बढ़ रहा है।

इसी तरह Electric Mobility एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें भारत और जापान के बीच का सहयोग दोनों देशों के लिए बेहद लाभदायक साबित होने जा रहा है।

साथियों,

इसके अलावा भारत में हम Infrastructure पर भी अभूतपूर्व काम कर रहे हैं। अब हमारा जोर Next Generation Infrastructure पर है। हमारा इरादा है कि हम एक ऐसी Competitive Economy का निर्माण करें जिसका आधार Skill, Speed और Scale हो। इस विचार को साकार करने के लिए हम Investment Climate को लगातार सुधारने की कोशिश में हैं।

आज इस मंच से, मैं आप सभी को भारत में बन रहे विशाल व्यापारिक अवसर के लिए आमंत्रण देता हूँ। इस अपार अवसर के कुछ और उदाहरण मैं आपको देना जरूर चाहूंगा:-

- हमारा सागरमाला कार्यक्रम जिसके जरिए हम समुद्री तटों को देश के प्रादेशिक क्षेत्रों को जोड़ना चाहते हैं, आपके लिए बहुत अच्छा अवसर है।
- स्मार्ट सिटी कार्यक्रम के चलते बहुत से नए अवसरों का भी निर्माण हो रहा है। हम अपने 50 शहरों में मेट्रो रेल की शुरुआत भी करना चाहते हैं।
- उसी प्रकार हमारा रेल एवं रोड के विस्तार और आधुनिकीकरण का कार्यक्रम भी बहुत ही विशाल है। अभी हमें कई हाई स्पीड कॉरिडोर बनाने हैं।
- वर्तमान पोर्ट एवं एयरपोर्ट के आधुनिकीकरण के साथ नए पोर्ट और एयरपोर्ट की स्थापना भी हमारे एजेंडे में है।
- इनलैंड वॉटर ट्रांसपोर्ट और ग्रीन एनर्जी हमारी नई प्रतिबद्धता है और वो भी आपके लिए बहुत बड़ा अवसर है।
- हमारी स्टील की खपत वर्तमान में बहुत कम है। साथ ही आयरन ओर प्रचुर मात्रा में है। मैं चाहता हूँ कि High Grade Steel का उत्पादन भारत में हो।

साथियों,

भारत और जापान दोनों ही लोकतान्त्रिक मूल्यों और स्वतन्त्रताओं के प्रबल समर्थक हैं।

साथ ही, विकास के लिए सहयोग के हमारे नज़रिए और नीतियों में बहुत समानताएँ हैं।

Infrastructure और capacity building के अलावा स्वास्थ्य तथा कृषि जैसे क्षेत्रों में जापान और भारत के बीच तीसरे देशों में सहयोग के लिए प्रबल संभावना है।

इसलिए, चाहे Indo-पैसिफिक हो या दक्षिण एशिया या अफ्रीका, भारत और जापान हमारे पार्टनर देशों की प्राथमिकताओं के आधार पर तीसरे देशों में विकास के लिए अपनी भागीदारी को और मज़बूत बनाएँगे।

International Solar Alliance में जापान के प्रवेश से सौर ऊर्जा और climate change जैसे विषयों पर हमारे दोनों देशों के बीच तीसरे देशों में साझेदारी के नए दरवाज़े खुले हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि आज इंडिया जापान बिज़नेस लीडर्स फ़ोरम की मीटिंग में फोरम के अनेक सदस्यों ने अफ्रीका में भारत और जापान के व्यवसायों के बीच इन क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए कई अच्छे विचार प्रस्तुत किए।

साथियों,

मैं हमेशा ही Strong India – Strong Japan की बात करता रहा हूँ।

मैं आज इस अवसर पर जापान के उद्यमी वर्ग का भारत पर विशेष विश्वास करने के लिए आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं आप सभी को भारत में निवेश की गति बढ़ाने के लिए भी आमंत्रित करना चाहूँगा।

मैं आपको आश्वस्त करता हूँ कि जापान और भारत के बीच व्यापारिक रिश्तों को और मज़बूत करने के

लिए, आपकी हर संभव मदद की जाएगी।

एक बार फिर इस आयोजन से जुड़ने के लिए आप सभी का मैं हृदय से बहुत बहुत धन्यवाद करता हूँ

AKT/SH/VK

(रिलीज़ आईडी: 1551059) आगंतुक पटल : 372

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Marathi , Assamese , Bengali , Tamil

प्रधानमंत्री कार्यालय

जापान की यात्रा के दौरान प्रधान मंत्री द्वारा प्रेस वक्तव्य (अक्टूबर 29, 2018)

प्रविष्टि तिथि: 29 OCT 2018 5:06PM by PIB Delhi

प्रधानमंत्री और मेरे घनिष्ठ मित्र आबे जी,

Distinguished delegates,

Friends,

नमस्ते!

कोन्निचिवा!

यहाँ टोक्यों में, और इससे पहले यामानाशी में और अपने घर में जिस आत्मीयता के साथ आबे सान ने मेरा स्वागत किया, उसने मेरी इस जापान यात्रा की सफलता को और भी अविस्मरणीय बना दिया है। जापान पूरब और पश्चिम की सभ्यताओं के सर्वश्रेष्ठ पहलुओं का संगम है। यह वही महान देश है जिसने सिखाया है कि मानव जाति के विकास का रास्ता पुरातन और नूतन के बीच टकराव का नहीं, बल्कि उनके सह-अस्तित्व और सृजन का है। नये का स्वागत और पुराने का सम्मान - यह जापान की विश्व सभ्यता को प्रमुख देन है। और साथ ही भारत और जापान की एक गहरी समानता भी।

Excellencies,

जापान और भारत के सम्बन्धों को हिन्द और प्रशांत महासागरों से गहराई और विस्तार प्राप्त हैं। ये सम्बन्ध लोकतांत्रिक मूल्यों और स्वतंत्रताओं के प्रति और Rule of Law के प्रति साझा प्रतिबद्धता पर आधारित हैं। अपने संबंधों के आगामी विकास के लिए एक विशाल विज्ञान पर कल और आज आबे सान के साथ मेरी बहुत उपयोगी बातचीत हुई है। आज इस साझा विज्ञान पर हमने हस्ताक्षर किये हैं। कल यह हमारे भविष्य को नई रौशनी देगा। हमारे बीच पूरी सहमति है कि हम अपने सहयोग को digital partnership से cyber space तक, स्वास्थ्य से रक्षा-सुरक्षा तक और सागर से अंतरिक्ष तक, हर क्षेत्र में अबाध गति देंगे। मुझे बताया गया है कि आज जापान के निवेशकों ने भारत में 2.5 बिलियन डॉलर के नए निवेश की घोषणा की है। इससे भारत में लगभग 30 हजार लोगों को रोजगार मिलेगा। इसी यात्रा के दौरान द्विपक्षीय करेन्सी स्वाप व्यवस्था पर हुई सहमति में हमारा आपसी विश्वास और हमारी आर्थिक साझेदारी की निरन्तर बढ़ती हुई नज़दीकी साफ़ तौर पर झलकते हैं।

Friends,

21वीं सदी एशिया की सदी है। लेकिन इसके रूप-स्वरूप पर प्रश्न हैं। किसका फायदा होगा, क्या करना होगा, ऐसे बहुत से सवाल हैं। लेकिन एक बात साफ़ है। भारत और जापान के सहयोग के बिना 21वीं सदी एशिया की सदी नहीं हो सकती। आबे सान और मैं हमारे विदेश और रक्षा मंत्रियों के बीच 2+2 Dialogue के लिए सहमत हुए हैं। इसका उद्देश्य विश्व में शांति और स्थिरता को बढ़ावा देना है। International Solar Alliance में जापान का प्रवेश, विश्व के हित में ऐसे सहयोग का एक और उज्ज्वल उदाहरण बनेगा।

Friends,

अगले वर्ष जापान ओसाका में G-20 Summit की मेज़बानी करेगा। अगले वर्ष रग्बी World Cup भी जापान में आयोजित किया जायेगा। पहली बार यह tournament एशिया में आयोजित होगा। और फिर 2020 में Olympics (ओलम्पिक्स) का आयोजन टोक्यो में होगा। इन सभी महत्वपूर्ण वैश्विक events के लिए, मेरी ओर से, और समस्त भारत की ओर से, हमारी हार्दिक शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

Friends,

भारत-जापान के संबंधों में प्रगति जापान की काईज़न philosophy की तरह असीम है। प्रधानमंत्री आबे के साथ मिलकर इन संबंधों को और अधिक मज़बूत बनाने के लिए मैं प्रतिबद्ध हूँ। मैं एक बार फिर आबे सान को, जापान सरकार को और आप सबको हार्दिक धन्यवाद और शुभकामनाएं देता हूँ।

दोमो अरिगातो गोज़ाईमस।

AKT/SH/VK

(रिलीज़ आईडी: 1551118) आगंतुक पटल : 394

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Marathi , Bengali , Assamese , Tamil

प्रधानमंत्री कार्यालय

प्रधानमंत्री का जी 20 शिखर सम्मेलन के मार्जिन पर ब्रिक्स नेताओं की बैठक के दौरान सम्बोधन (नवंबर 30, 2018)

प्रविष्टि तिथि: 30 NOV 2018 10:09PM by PIB Delhi

Your Excellency President Cyril Ramaphosa,
Your Excellency President Michel Temer,
Your Excellency President Vladimir Putin ,
Your Excellency President Xi Jinping ,

- मैं President Ramaphosa को जुलाई में Johannesburg में BRICS Summit की सफलता और इस बैठक के आयोजन के लिए धन्यवाद देता हूँ।
- हम BRICS में विश्व की 42% जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं। पिछले कुछ वर्षों से BRICS ग्लोबल ग्रोथ का इंजन बना हुआ है। हालांकि, अभी भी विश्व GDP (23%) और trade (16%) में हमारे हिस्से के बढ़ने की बहुत अधिक संभावनाएं हैं। वह जनसंख्या के अनुरूप नहीं हैं।

Excellencies,

- Globalisation ने लाखों लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है। हालांकि, globalisation के फायदों के समान वितरण को लेकर हमारे सामने चुनौतियां हैं। Multilateralism और नियम-आधारित विश्व-व्यवस्था के सामने निरंतर कठिनाइयाँ आ रही हैं और Protectionism बढ़ रहा है। Currency अवमूल्यन और तेल कीमतों में तेज बढ़ोत्तरी पिछले कुछ वर्षों में अर्जित लाभ को चुनौती दे रहे हैं।
- BRICS देश वैश्विक स्थिरता और विकास में योगदान देते रहे हैं। हमने विश्व की आर्थिक और राजनैतिक संरचना को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- हमने global economic governance के architecture को और अधिक प्रतिनिधित्व वाला और लोकतांत्रिक बनाने में सार्थक योगदान दिया है और इस दिशा में आगे भी कार्य करते रहेंगे।
- हमें संयुक्त राष्ट्र और इसकी सुरक्षा परिषद सहित multilateral institutions में विकासशील देशों को और अधिक प्रतिनिधित्व दिए जाने पर एक सुर में बात करनी चाहिए। यह वही मकसद है जिसके लिए हम BRICS में एक साथ आए हैं।
- हमें नियम-आधारित विश्व-व्यवस्था को सुनिश्चित करने के लिए UN, WTO, यु.एन.एफ़.सी.सी., World Bank इत्यादि जैसे multilateral institutions के साथ मिलकर काम करना होगा जिससे इनकी प्रासंगिकता बनी रहे और वह समय की वास्तविकताओं को दर्शाए। इस संबंध में, मैंने जोहान्सबर्ग की अपनी मुलाकात में 'Reformed Multilateralism' का सुझाव दिया है।
- नए Industrial Revolution, कार्य के भविष्य, आदि विषयों के G20 एजेंडा में समावेश ने वैश्विक विकास की चर्चा को समृद्ध किया है। हम BRICS देश नए Industrial Revolution में सहयोग करने के लिए उत्सुक हैं।
- इस संदर्भ में, वैश्वीकरण और migration के विषयों को बेहतर बहुपक्षीय समन्वय और सहयोग के द्वारा संबोधित करना होगा। ग्लोबल सप्लाय चेन में लेबर मुद्दों का प्रबंधन, पूरी वैल्यू चेन में उत्कृष्ट काम को सुनिश्चित करने के लिए जरूरी होगा। विश्व भर में कामगारों की सामाजिक संरक्षण योजनाओं की पोर्टेबिलिटी और मजदूरों की सहज आवाजाही महत्वपूर्ण है।

- महिलाओं के सशक्तिकरण और sustainable food future जैसे सामाजिक-आर्थिक मामले G20 Summit में उठाए जाएंगे। पहले मैंने sustainable development और infrastructure पर disaster resilient infrastructure की जरूरत का सुझाव दिया था। इसे आगे बढ़ाने के लिए हमें मिलकर काम करना होगा।

Excellencies,

- भारत BRICS political exchanges को बढ़ाने में हो रही प्रगति को महत्व देता है और उसकी सराहना करता है। इस संबंध में हमारे विदेश मंत्रियों, NSAs और Middle East के विशेष दूतों की मुलाकातों ने अहम योगदान दिया है।
- हम सभी इस बात पर सहमत हैं कि आज आतंकवाद और radicalisation पूरी दुनिया के सामने सबसे बड़ी चुनौतियां हैं। यह न केवल शांति और सुरक्षा के लिए खतरा है, यह आर्थिक विकास के लिए भी एक चुनौती है।
- हमने सभी देशों से FATF मानकों के कार्यान्वयन का आग्रह किया है। आतंकवादियों के नेटवर्क, उनकी फाइनेंसिंग और उनकी आवाजाही को रोकने के लिए संयुक्त राष्ट्र के Counter Terrorism Framework को मजबूत करने हेतु BRICS और G20 देशों को साथ मिलकर काम करना होगा।
- आर्थिक अपराधियों और भगोड़ों के विरुद्ध हमें मिलकर काम करने की आवश्यकता है। यह समस्या विश्व की आर्थिक स्थिरता के लिए गंभीर खतरा बन सकती है।

Excellencies,

- G20 में हमारे सहयोग का आधार मजबूत होने लगा है। हमारे BRICS Sherpas, G20 मामलों में परामर्श और सहयोग करते रहे हैं।
- G20 Summit की अध्यक्षता एक विकासशील देश कर रहा है। यह एक सुअवसर है कि G 20 के एजेंडा और इसके परिणामों का फोकस विकासशील देशों की प्राथमिकताओं पर लाया जाए।
- मैं, अंत में एक बार फिर से President रामाफोसा द्वारा जोहान्सबर्ग Summit की सफल मेजबानी और इस बैठक के आयोजन के लिए धन्यवाद करता हूँ।
- मैं आगामी BRICS Chairship के लिए ब्राज़ील और उसके नेतृत्व को भारत के पूर्ण समर्थन और सहयोग का विश्वास भी दिलाता हूँ। मुझे भरोसा है कि Brazil की Chairship के अंतर्गत BRICS सहयोग नई ऊंचाईयों पर पहुंचेगा।

Excellencies,

- मैं राष्ट्रपति ब्राज़ील का इसलिए भी आभार व्यक्त करता हूँ, पिछले 6 बार से आपका मार्गदर्शन मिलता रहा और आपके साथ काम करने का अवसर मिलता रहा और जैसा आपने कहा कि ये आखरी मीटिंग है हमारी आपके साथ बहुत बहुत शुभकामनाये बहुत बहुत धन्यवाद

AKT/SH

(रिलीज़ आईडी: 1554378) आगंतुक पटल : 514

प्रधानमंत्री कार्यालय

भूटान के प्रधानमंत्री की भारत की राजकीय यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का प्रेस वक्तव्य

प्रविष्टि तिथि: 28 DEC 2018 1:38PM by PIB Delhi

Your Excellency, प्रधानमंत्री डॉक्टर लोटे शेरिंग,

भूटान से यहाँ आए सभी विशिष्ट अतिथिगण,

Friends

यह वर्ष भारत और भूटान के राजनयिक संबंधों की स्वर्ण जयंती का वर्ष है। इस ऐतिहासिक और शुभ वर्ष में, प्रधानमंत्री डॉक्टर लोटे का भारत में हार्दिक स्वागत करना मेरे लिए हर्ष का विषय है। भूटान में इस वर्ष तीसरे आम चुनावों के सफल संचालन के लिए भूटान सरकार और भूटान की जनता, दोनों का मैं हृदय से अभिनंदन करता हूँ। इन चुनावों में सफलता के लिए प्रधानमंत्री डॉक्टर लोटे को मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं। मुझे विश्वास है कि उनके नेतृत्व में भूटान सफलता और खुशहाली की राह पर प्रगति करता रहेगा।

Friends.

प्रधानमंत्री डॉक्टर लोटे ने भूटान के लिए उनके “narrowing the gap” vision के बारे में मुझे विस्तार से जानकारी दी। मैं उनकी दूरदृष्टि की सराहना तो करता ही हूँ, मुझे इसलिए भी बहुत प्रसन्नता है कि उनका vision मेरे “सबका साथ, सबका विकास” के vision से मेल रखता है। मैंने प्रधानमंत्री जी को आश्वस्त किया है कि भूटान के विकास में भारत हमेशा की तरह एक भरोसेमंद मित्र और साझेदार की भूमिका निभाएगा। भूटान की 12वीं पंचवर्षीय योजना में भारत चार हजार, पाँच सौ करोड़ रुपये का योगदान देगा। यह योगदान भूटान की आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुरूप होगा।

Friends.

भारत और भूटान के सहयोग के लंबे इतिहास में hydro projects में सहयोग एक अहम हिस्सा रहा है। आज हमने इस महत्वपूर्ण sector में सभी संबंधित projects में अपने सहयोग की समीक्षा की। यह प्रसन्नता का विषय है कि मान्ग-देछू project पर काम शीघ्र ही पूरा होने वाला है। इस project के tariff पर भी सहमति हो गई है। अन्य projects पर भी कार्य संतोषजनक प्रगति कर रहा है। और हम दोनों सभी projects को और अधिक गति देना चाहते हैं। हमारे सहयोग में एक नया आयाम अंतरिक्ष विज्ञान का है। मुझे प्रसन्नता है कि South Asian Satellite से लाभ उठाने के लिए ISRO द्वारा भूटान में बनाया जा रहा Ground-Station भी शीघ्र तैयार होने वाला है। इस project के पूरा होने से भूटान के दूर-दराज के क्षेत्रों में भी मौसम की जानकारी, tele-medicine और disaster relief जैसे कार्यों में मदद मिलेगी।

Friends,

आज प्रधानमंत्री डॉक्टर लोटे ने मुझे एक खुशखबरी भी दी है। भूटान सरकार ने शीघ्र ही RuPay Cards को launch करने का निर्णय लिया है। Excellency, इस निर्णय के लिए मैं आपका हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। मुझे विश्वास है कि इससे दोनों देशों के बीच people-to-people संबंधों को और अधिक बल मिलेगा।

Excellency.

आपने अपनी पहली विदेश यात्रा के लिए भारत को चुना। और, चार वर्ष पहले, प्रधानमंत्री के रूप में मेरी पहली विदेश यात्रा भूटान की थी। एक दूसरे के साथ सहयोग मजबूत करने के लिए, विकास की राह पर कदम से कदम मिला कर आगे बढ़ने के लिए, हमारी साझा प्रतिबद्धता का यह प्रतीक है। मुझे विश्वास है कि आपकी यह भारत यात्रा हमारे संबंधों को एक नई गति देने में सफल होगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं एक बार फिर भारत में आपका और आपके delegation का हार्दिक स्वागत करता हूँ।

धन्यवाद।

ताशी देलेग!

एकेटी/एसएच/एसबीपी

(रिलीज़ आईडी: 1557560) आगंतुक पटल : 262